

पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय

27-अप्रैल-2017 15:20 IST

शिमला-दिल्ली हवाई मार्ग पर क्षेत्रीय कनेक्टिविटी योजना उड़ान के अंतर्गत फ्लाईट को हरी झंडी दिखाने के बाद प्रधानमंत्री के भाषण का मूल पाठ

मेरे प्यारे देश वासियों बहुत तेजी से भारत के मध्यमवर्गीय जीवन में एक नये expressions नये सपने नये संकल्प और कुछ करने की हिम्मत देश महसूस कर रहा है। एक ऐसा वर्ग है जिन्हें अगर अवसर मिले तो देश को विकास की नई ऊंचाइयों को ले जाने में कल्पना बहार के उत्तम परिणाम दे सकते हैं।

विशेषकर इस जो युवा है 1st generation रिस्क टेकिंग capacity जिसकी सबसे ज्यादा है ये बहुत बड़ा वर्ग है। अगर इन युवाओं को अवसर मिलेगा तो वो देश की तकदीर भी बदल देंगे, देश की तस्वीर भी बदल देंगे। पूरा विश्व ये मानता है कि भारत में हवाई यात्रा के लिए Aviation के लिए विश्व में सबसे ज्यादा अवसर कहीं है तो भारत में है। बहुत पहले ये हमारी सोच ये बनी थी, हवाई यात्रा , ये राजाओं महाराजाओं का ही विषय है और इसलिए हमारी Airlines के साथ जो logo जुड़ा था वो भी महाराजा का जुड़ा था और जब अटल जी सरकार थी वो हमारे राजीव प्रताप रूड़ी Aviation Ministry में थे तो मैंने एक दिन तब तो मैं पार्टी का काम करता था और हिमाचल में ही रहता था तो मैं एक बार उनसे मिला मैंने कहा भाई क्या ये logo नहीं बदल सकते क्या? पूछे क्या? मैंने कहा कि इससे लग रहा है कि हवाई जहाज और हवाई यात्रा ये एक ही वर्ग के लोगों के लिए है तो उन्होंने कहा कि क्या करें मैंने कहा कुछ मत करिए cartoonist Laxman का जो common man है उसी logo में लगा लीजिए उसकी permission ले लीजिए और मुझे खुशी है कि अटल जी की सरकार के समय उस common man को भी समाविष्ट किया गया था ।

उस समय जबकि मैं किसी राजनीतिक पद पर नहीं था मैं संगठन का काम करता था लेकिन उस समय मेरी समझ में आता था कि ये जो सोच है राजा महाराजाओं के साथ जुड़ी हुई है उसको बदलना है और उसमें से हमारे विभाग से मैंने आग्रह किया कि एक तो देश में एक सबसे बड़ी कमी है कि हमारी कोई Aviation Policy नहीं है। इतना बड़ा देश है, इतनी संभावनाएँ हैं, विश्व का ध्यान है एक Aviation Policy बनाएं, कसौटी पर कसे। सारे स्टेट होल्डर को उसमें विश्वास में लें और नीति के आधार पर इसके expansion की एक design तैयार करें। मुझे खुशी है कि आजादी के बाद पहली बार देश में Aviation Policy बनाने का सौभाग्य हमारी सरकार को मिला। अब उस समय मैंने पहली मितिंग में कहा था कि Aviation को मैं किस रूप में देखता हूँ हमारे देश में गरीब व्यक्ति की एक पहचान है कि वो हवाई चप्पल पहनता है और मैंने उस मितिंग में कहा था कि मैं चाहता हूँ कि हवाई जहाज में हवाई चप्पल वाले लोग दिखाई दें। और आज ये संभव हो रहा है ...आज शिमला और दिल्ली को हवाई यात्रा से नांदेड़ और हैदराबाद को, हमारे नड्डा जी यहां हैं वो यहां हिमाचल के हैं , शिमला से जुड़ने का आनंद उनको विशेष है। और मैं दिल्ली से आया हूँ तो मुझे और ज्यादा आनंद है।

आज हम टैक्सी में जाएं by road एक किलोमीटर का किराया आठ से दस रुपया होता है। दिल्ली-शिमला की हवाई यात्रा ज्यादा से ज्यादा एक घंटे में अगर रोड पर मैं यात्रा करके आता है तो कम से कम नौ घंटे, अगर रोड मार्ग से आया मैं तो किलोमीटर का हिसाब लगाऊँ और दस रुपया हिसाब लगाऊँ मैं, और पहाड़ पर दस से तो ज्यादा हो जाता है। ये सफर ऐसी है जो समय भी बचाएगी और इसका खर्च टैक्सी में अगर किलोमीटर का दस रुपया लगता है तो नई पालिसी के तहत हवाई यात्रा का किलोमीटर का खर्चा सिर्फ छः या सात रुपया लगेगा। नांदेड़ से आज हैदराबाद शुरू हो रहा है लेकिन नांदेड़ से मुंबई सबसे पहले इसके बाद शुरू होने वाली व्यवस्था है और मैं Aviation कंपनियों को एक सीख देना चाहता हूँ और ये जो मैं उनको advice दे रहा हूँ इसके लिए मेरी तरफ से कोई Royalty charge नहीं करूँगा। मैं मुफ्त में उनको advice दे रहा हूँ अगर Aviation कंपनियाँ व्यापारिक दृष्टि से सोचते हैं तो सोचे कि नांदेड़ साहिब, अमृतसर साहिब और पटना साहिब अगर हवाई circular route बनाएँ दुनिया भर के सिख यात्री इस हवाई यात्रा का सबसे ज्यादा लाभ उठाएँ।

बहुत कम लोगों को मालूम हागा कि जब द्वितीय विश्व युद्ध हुआ तो ज्यादातर eastern part में बहुत सारी हवाई पट्टियाँ बनी, सीमावर्ती क्षेत्रों में भी बहुत सारी हवाई पट्टियाँ बनी लेकिन कभी उसका अभी उपयोग नहीं हुआ। कुछ तो ऐसी हवाई पट्टियाँ होंगी जहाँ से लोग सामान उखाड़ कर के ले गए होंगे। देश आजाद होने के बाद आज हम सत्तर साल आजादी के पूरे हो गए लेकिन सिर्फ सत्तर-पच्चातर ही एयरपोर्ट ऐसे हैं जो commercial purpose के लिए काम आ रहे हैं। सत्तर साल में सत्तर-पच्चातर एयरपोर्ट इस नई पालिसी के द्वारा एक साल के भीतर-भीतर इससे ज्यादा नये एयरपोर्ट commercial activity के लिए जोड़ दिये जाएँ। भारत के टायर टू cites growth engine बन रहे हैं। विकास के अंदर ऊर्जा भरने की ताकत टायर टू टायर थी cites में आ रहे हैं अगर वहाँ पर air connectivity मिल जाती है तो पूँजी निवेशक Management Experts, Education के लिए quality Man power इन सबको अगर सुविधा connectivity की मिलती है तो उस जगह पर ये भी विकास की संभावनाएँ बढ़ जाती हैं। दुनिया में सबसे तेज गति से विकास हो रहा है Tourism का लेकिन Tourism में destination पर पहुंचने के बाद यात्री कष्ट झेलने को तैयार होता है, उसको पसंद भी आता है मेहनत करना पसंद आता है, पहाड़ चढ़ना पसंद आता है, पसीना बहाना पसंद आता है लेकिन पहुंचने तक वो

सबसे ज्यादा अच्छी सुविधा पसंद करता है उसे अगर air connectivity मिलती है, अगर उसे internet connectivity मिलती है, उसको अगर वाईफाई सुविधा मिलती है तो वो उस destination को पहले पसंद करता है।

वहां जाने के बाद वो कष्ट झेलने को तैयार है, risk लेने को तैयार है लेकिन जाने और आने की सुविधा वो पहले पसंद करता है। शिमला में अब ये व्यवस्था अब फिर से आरंभ हो रही है, बहुत सालों तक ये अटका पड़ा रहा। मुझे विश्वास है कि हिमाचल के Tourism को बहुत बड़ा बल मिलेगा इससे। 2500 रुपया सबसे ज्यादा है ऐसी टिकट की व्यवस्था 2500 और 2500 से कम करना है।

North-East भारत का एक ऐसा भू-भाग है देखते ही बनता है एक बार जो गया उसको बार-बार जाने का मन कर जाये ऐसा हमारा North-East है। प्रकृति का वहां ऐसा वास्तव्य मिलता है जो शायद कहीं और मिलता हो। लेकिन connectivity के अभाव से हिंदुस्तान का सामान्य नागरिक वहां जुड़ नहीं पाता है ये देश के integration के लिए भी बहुत बड़ा उत्सव होने वाला है। इससे सिर्फ यात्रा की सुविधाएं नहीं, दो भू-भाग, दो कल्चर, दो परंपराएं बड़ी सहजता से जुड़ जाती हैं। मुझे खुशी है कि देश में हवाई यात्रा की दृष्टि से सामान्य नागरिक को और इसका जो उड़ान (UDAN) नाम है वो उड़े देश का आम नागरिक उस से उड़ान शब्द बना है। और जैसा मैंने कहा कि हवाई यात्रा में हवाई चप्पल वाला नजर आना चाहिए, और सब उड़ें...सब जुड़ें ।

देश के एक कोने से दूसरे कोने को जोड़ने को एक महाअभियान इससे हो रहा है। मेरे लिए खुशी की बात है कि यहां एक दूसरे कार्यक्रम का भी launching हो रहा है उसका शिलान्यास हो रहा है। Human Resource development जितना area specific होता है फोकस होता है उतनी हमारे देश की क्षमता बढ़ती है। भारत के पास Hydro Power की बहुत संभावना है अनुमानित कल्पना है कि करीब-करीब डेढ़ लाख से ज्यादा मेगावाट बिजली हम Hydro से कर सकते हैं उसके लिए human resource चाहिए Man Power चाहिए और उसके लिए dedicated institutions चाहिए। हिमाचल प्रदेश और पूरा हिमालयन प्लेट जम्मू-कश्मीर से लेकर के पूरा वहां पर hydro power project की बहुत संभावना है अगर यहां के नौजवानों को hydro से संबंधित engineering की शिक्षा मिलती है specialize subject उसका तैयार होते हैं मैं समझता हूं ये बहुत बड़ी सेवा होगी और इसलिए Mechanical Engineering बाकी सारे विषय भी होंगे। लेकिन special focus hydro power से संबंधित होगा उसकी शिक्षा का एक बहुत बड़ा काम बिलासपुर में होने वाला है उसके शिलान्यास का आज अवसर मुझे मिला है। मैं हिमाचलवासियों को और देश की युवा पीढ़ी को ये नजराना देते हुए बड़ा गर्व अनुभव कर रहा हूं और एक प्रकार से आज देश हिमाचल की धरती से air power का भी अनुभव कर रहा है और hydro power का भी अनुभव कर रहा है।

वायु शक्ति और जल शक्ति आज के विकास के अंदर बहुत बड़ी ताकत बनते हैं और जो हम New India का सपना देख रहे हैं जिसमें जन-धन का सामर्थ्य है, वन-धन का सामर्थ्य है, जल-धन का भी उतना ही सामर्थ्य है उस सामर्थ्य को लेकर के हमें आगे बढ़ना है। मैं फिर एक बार भारत सरकार के इस विभाग को aviation department को उनके सभी अधिकारियों को उनके तमाम मंत्री श्री और उनके नेतृत्व को हृदय से बहुत बधाई देता हूं कि बहुत ही महत्वाकांक्षी ये योजना का आरंभ हो रहा है जो बहुत ही कम समय में हिंदुस्तान के नये growth center की हवाई उड़ान भरने की ताकत उससे मिलने वाली हैं मेरी तरफ से बहुत-बहुत शुभकामनाएं,

धन्यवाद

अतुल कुमार तिवारी/हिमांशु सिंह/ममता

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

14-सितम्बर-2017 16:30 IST

**अहमदाबाद में भारत की प्रथम तीव्र-गति रेल परियोजना के 'भूमि पूजन' तथा शिलान्यास समारोह पर जनसभा को
प्रधानमंत्री द्वारा दिए गए संबोधन का मूल पाठ**

जापान से आए हुए विशिष्टगण और यहां इस ऐतिहासिक अवसर पर उपस्थित सभी महानुभव,

अपने करीबी मित्र श्रीमान आबे-सान का, मैं भारत में और विशेषकर गुजरात की धरती पर एक बार फिर बहुत-बहुत हृदय से स्वागत करता हूं।

(अने मारे तमने पण बधाने अभिनंदन आपवा छे. विश्वना एक नेताने, जापानना प्रधानमंत्रीने अने भारतना परम मित्रने अने मारा अंगत मित्रने, जे रीते तमे स्वागत सम्मान कर्युं, गईकाल जे द्रश्य बताया जे वातावरण बनाव्युं हुं हृदयपूर्वक सौ गुजरातवासीओनो आभार मानुं छुं।)

साथियों, कोई भी देश आधे अधूरे संकल्पों और बंधे हुए सपनों के साथ कभी भी आगे नहीं बढ़ सकता है। सपनों का विस्तार ही किसी भी देश को, किसी भी समाज को, किसी भी व्यक्ति की उड़ान तय करने का सामर्थ्य रखता है। ये 'New India' है और इसके सपनों का विस्तार, इसकी उड़ान असीम है, इसकी इच्छाशक्ति असीमित है।

आज भारत ने अपने बरसों पुराने सपने को पूरा करने की ओर एक बहुत बड़ा अहम कदम उठाया है। मैं देश के सवा सौ करोड़ देशवासियों को Mumbai-Ahmedabad High-speed Rail Corridor के इस भूमि पूजन के अवसर पर कोटि-कोटि शुभकामनाएं और बधाइयां देता हूं। 'बुलेट ट्रेन' परियोजना एक ऐसा प्रोजेक्ट है जो तेज गति, तेज प्रगति और उसके साथ तेज टेक्नोलॉजी के माध्यम से तेज परिणाम भी लाने वाला है। जिसमें सुविधा भी है, सुरक्षा भी है। जो रोजगार भी लाएगा और वो रफ्तार भी लाएगा। जो Human Friendly भी है और Eco-friendly भी है। आज का दिन, जापान और भारत के रिश्तों के लिए एक ऐतिहासिक और उतना ही भावात्मक अवसर भी है। एक अच्छा दोस्त हमेशा समय और सीमा के बंधनों से परे होता है और जापान ने दिखा दिया है कि वो भारत का कैसा मजबूत दोस्त है, जो सीमा और समय से परे है। मुंबई और अहमदाबाद के बीच, भारत का पहला High-speed Rail Project, दोनों देशों के बीच मजबूत होते संबंधों का भी एक उम्दा उदाहरण है, एक प्रतीक है। अगर आज इतने कम समय में इस Project का भूमि पूजन हो रहा है तो उसका सबसे बड़ा श्रेय मेरे परम मित्र श्री आबे-सान को जाता है। श्री शिंजो आबे ने व्यक्तिगत रुचि लेकर ये सुनिश्चित किया कि Project में कहीं कोई दिक्कत नहीं आनी चाहिए। साथियों मानव सभ्यता का विकास, यातायात के साधनों के विकास के साथ बहुत करीबी से जुड़ा हुआ है अगर हम Asian civilization पर गौर करें तो देखेंगे उस समय गांव, शहर और लोग नदी के तट पर बसते थे और यही वो क्षेत्र होते थे जो विकास का केंद्र बनते थे, उसके बाद सड़के विकास का माध्यम बनीं और जहां जहां से Highways गुजरते थे वहीं पर शहर बसना शुरू हो गए। और अब Next Generation growth वहीं पर होगी, जहां High-speed Corridor होंगे।

साथियों किसी देश के विकास में Transport System अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है, चाहे वो रेल हो, सड़क हो, जलमार्ग हो या वायुमार्ग हो। ये Transport System देश में connectivity का आधार बनाती है और connectivity का लाभ देश के लोगों को विभिन्न तरीकों से मिलता है अनेक प्रकार से मिलता है। जो अमेरिका के इतिहास को जानते होंगे अमेरिका के इतिहास में आज पूरा विश्व जानता है कि railways आने के बाद कैसे अमेरिका में आर्थिक प्रगति का नया दौर शुरू हुआ था। अभी हमारे मित्र आबे-सान बता रहे थे कि दूसरे विश्व युद्ध के बाद जापान का हाल क्या था! कैसी भयानक जिंदगी थी, कैसी गरीबी थी, लेकिन 1964 में जापान में बुलेट ट्रेन चली और फिर ये तकनीक धीरे-धीरे दुनिया के पंद्रह देशों में फैली और उसने जापान के अर्थजगत को बदल दिया। आज यूरोप से चीन तक इसका छाया नजर आता है। High-speed Rail इन देशों में न सिर्फ आर्थिक, बल्कि सामाजिक परिवर्तन लाने में भी एक बहुत बड़ी अहम भूमिका उसने अदा की है। तब से लेकर के अब तक, समय बहुत बदला है, जरूरतें बदली हैं। और इसलिए प्रयास करने के तरीकों में भी बदलाव बहुत ही आवश्यक है। समय के साथ छोटे-छोटे प्रयास किए गए हैं। नई चीजें जोड़ी गई हैं। लेकिन अब वक्त धीरे-धीरे बढ़ने का नहीं है। समय ज्यादा इंतजार नहीं करता। टेक्नोलॉजी जो पिछले सौ साल में नहीं बदली होगी। वो

पिछले पच्चीस साल में बदल चुकी है। अब इतनी तेज गति से बदलाव आ रहा है, तो आज हमारा जोड़ connectivity से आगे बढ़कर, High-speed connectivity पर हमारी प्राथमिकता है हमारा जोर है। High-speed connectivity से speed बढ़ेगी distance घटेगी, आर्थिक प्रगति के नये अवसर खुलेंगे। साथियों, किसी भी देश में आर्थिक प्रगति का सीधा संबंध होता है productivity से, growth तभी होगी जब productivity होगी। हमारा जोर है 'more productivity with high-speed connectivity'.

साथियों, आज इस अवसर पर मैं जापान के एक और मित्र भाव की विशेष प्रशंसा करना चाहता हूं। हम भारतीयों और विशेषकर हम गुजराती और अहमदाबादी जब भी कोई चीज खरीदने जाते हैं, जब बिक्री की बात आती है तो बराबर तोल-मोल का हिसाब लगाते हैं, एक-एक पैसे का हिसाब लगाते हैं। घाटे और फायदे के रूप रंग बराबर चकासते हैं। जब हम एक छोटा सा बाइक भी खरीदने के लिए जाएं और बैंक से लोन ले जाएं तो दस बैंकों में चक्कर काटेंगे। एक बैंक में दस-दस बार जाएंगे और कम रेट से कम ब्याज दर से कौन लोन देगा, उसका जरा हिसाब लगाते हैं। कोई बैंक 8 प्रतिशत बताती होगी, कोई बैंक 9 प्रतिशत बताती होगी और फिर हम हिसाब लगाते होंगे जोड़-तोड़ भी करते होंगे कि इतने परसेंट ब्याज से अगर मैं बाइक लाता हूं और जब बैंकों में ब्याज समेत पैसे लौटाऊंगा तब मेरी बाइक की कीमत क्या बनेगी? कितने साल में बनेगी? ये बहुत बारीकी से देखते हैं, बैंक वाला भी थक जाए उतनी बार बैंक के दरवाजे पर जाते हैं जरा यार कम करो। 8 प्रतिशत पर नहीं ले सकता 9 प्रतिशत पर नहीं ले सकता जरा कम करो। आधा परसेंट भी कोई कम कर दे तो खुशी मनाते हैं। ये हम भली-भांति जानते हैं और अहमदाबादी तो शायद बहुत अच्छी तरह से जानते हैं। लेकिन कल्पना कीजिए दोस्तों कोई ऐसा दोस्त, ऐसी बैंक नहीं मिल सकती जैसे भारत को आबे-सान जैसा दोस्त मिला है, जापान जैसा दोस्त मिला है। अगर कोई ये कहे कि बिना ब्याज के ही लोन ले लो और दस बीस नहीं पचास साल में चुकाना, कोई यकीन करेगा क्या? लोगों को ऐसा बैंक नहीं मिलते, लेकिन भारत को ऐसा दोस्त मिला है जिसने बुलेट ट्रेन के लिए 88 हजार करोड़ रुपया, Eighty Eight Thousand Crore rupees सिर्फ 0.1 परसेंट, 0.1 प्रतिशत ब्याज दर से ये बुलेट ट्रेन के लिए पैसा देना का फैसला किया है।

मैं हैरान हूं जब मैं गुजरात में था, तब मैं बुलेट ट्रेन की जब बात करता था तो मुझे पूछा जाता था मोदी बाते करता है बुलेट क्यों लाएं, कब लाएंगे, कब लाएंगे, कब लाएंगे? अब जब लाना शुरू किया तो पूछ रहे हैं क्यों लाएं? भाईयो बहनों ये बुलेट ट्रेन जापान की भारत को बहुत बड़ी सौगात है एक प्रकार से मुफ्त में ये पूरा प्रोजेक्ट बनता जा रहा है। और मैं जापान का फिर से बहुत-बहुत आभार व्यक्त करता हूं। जो इस प्रोजेक्ट के लिए तकनीक और आर्थिक मदद के साथ भारत के सहयोग के लिए आज हमारे साथ जुड़ा है, आगे आया है।

भाईयों और बहनों इस High-Speed Railway System से न दो जगहों के बीच दूरगामी होगी बल्कि पांच सौ किलोमीटर दूर बसे शहरों के लोग भी और निकट आ जाएंगे, और पास आ जाएंगे और इसलिए मैं तो कहूंगा यह ट्रेन आमरू अहमदाबाद से आमची मुंबई जाएगी। जब ये प्रोजेक्ट पूरा होगा तो मुंबई और अहमदाबाद की दूरी दो से तीन घंटे के भीतर-भीतर पूरी की जा सकती है। अगर हम हवाई यात्रा से इसकी तुलना करें तो जितना समय यहां से एयरपोर्ट जाने में वहां की औपचारिकता पूरी करने में और हवाई यात्रा के बाद अपने घर या अपने दफ्तर पहुंचने में जितना समय लगता है उससे भी आधे समय में ये High Speed Rail से मुंबई जा सकते हैं। आप कल्पना कर सकते हैं कितना बड़ा बदलाव आएगा। लोगों का कितना समय बचेगा। मुंबई अहमदाबाद सड़क रूट पर जो हजारों गाड़ियाँ हर रोज चला करती हैं, उसमें भी कमी आएगी इसका पर्यावरण पर भी positive impact होगा और जब इंधन बचेगा, तो विदेशी पूंजी भी बचेगी क्योंकि हमें सारा इंधन विदेशों से लाना पड़ता है।

साथियों इस प्रोजेक्ट के साथ Mumbai-Ahmedabad Route पर एक नया Economic System भी विकसित भी होने जा रहा है। दोनों शहरों के बीच का पूरा एरिया एक प्रकार से Single Economic Zone में परिवर्तित हो जाएगा। High-speed Corridor से न सिर्फ यातायात तेज होगा, लेकिन trade को भी बढ़ावा मिलेगा ज्यादा से ज्यादा क्षेत्रों के बीच आपसी संपर्क बढ़ेगा और इससे चाहे transfer of manpower हो या सामानों की दुलाई हो, ये बहुत ही सरल और सुगम हो जाएगी। इससे देश का विकास भी होगा और मैंने जैसे पहले कहा देश को एक नई रफ्तार मिलेगी।

एक धारणा सी बन गई है कि जितनी भी नई टेक्नोलॉजी आती है वो सिर्फ अमीरों के लिए आती है, जबकि अनुभव कुछ और होता है। टेक्नोलॉजी गरीबों के empowerment के लिए अगर उपयोग किया जाए तो गरीबी के खिलाफ की लड़ाई बहुत तेजी से हम जीत सकते हैं और इसलिए हमारा मकसद है इस technology का maximum उपयोग करते हुए उसको इतना affordable बना दिया जाए कि देश के गरीब की जिंदगी के साथ वो जुड़ जाएं। मैं मानता हूं कि Technology का लाभ तभी है जब देश का सामान्य नागरिक भी इसका भली-भांति उपयोग कर सके। आज जब हम Railways में नवी एवं अत्याधुनिकों को जोड़ रहे हैं तो हमारा पूरा प्रयास है कि देश के सामान्य मानवी को new technology का लाभ मिलना चाहिए इस प्रोजेक्ट के दौरान Technology Transfer से रेलवे को फायदा होगा। क्षेत्र के Technicians, Vendors,

Manufactures उनको भी लाभ मिलेगा और एक तरफ पूरा नेटवर्क जो है रेलवे का, उसको नयेपन की ओर आगे जाना पड़ेगा और उसको लाभ मिलेगा।

साथियों, टेक्नोलॉजी हमें भले जापान से मिल रही है लेकिन बुलेट ट्रेन के लिए अधिकांश संसाधन भारत में ही जुटाए जाएंगे। और इसलिए हमारे उद्योगों को भी World Class Equipment Manufacturing करने होंगे और उनकी समय पर सप्लाई भी करनी होगी। 'Zero Defect, Zero Effect' manufacturing पर बल देना पड़ेगा। इससे 'Make in India' को भी मजबूती मिलेगी। Direct or Indirect Employment के हजारों अवसर भी ये प्रोजेक्ट अपने साथ लेकर कर के आ रहा है।

साथियों देश में Integrated Transport System 'New India' की आवश्यकता है। 'New India' का सपना है। और इसलिए हम देश के Feature Proofing पर ध्यान दे रहे हैं, ताकि आने वाली पीढ़ियों के हिसाब से Infrastructure का निर्माण किया जा सके। Railways हों, Highways हों, Waterways हों या Airways हों, हमने सभी क्षेत्रों में एक समान Infrastructure पर जोर दिया है और अप्रत्याशित गति से कार्यों को आगे बढ़ा रहे हैं। हम आज पहले से ज्यादा तेज गति से सड़कों का निर्माण कर रहे हैं। GST का फायदा देश के Transport System को भी मिला है और ट्रकों के द्वारा प्रतिदिन तय की जाने वाली दूरी तीस प्रतिशत बढ़ी है। अगर पहले Goods लेकर के जाने वाला एक ट्रक एक दिन में अगर 200 किलोमीटर जाता था, तो GST आने के बाद check-post की मुसीबतें दूर होने के बाद आज वही ट्रक 200 किलोमीटर की बजाय 250 किलोमीटर से भी ज्यादा यात्रा एक दिन में कर लेता है, यानि पूरी economy में गति में 30 प्रतिशत की बढ़ोतरी एकमात्र GST के निर्णय के कारण संभव हुई है और उसके कारण लोगों को सस्ता सामान पहुंचाने का संभावना बनने वाली है।

सरकार जलमार्गों को परिवहन के पर्यावरण अनुकूल तरीके के रूप में विकसित करने के लिए भी प्रतिबद्ध है इसी दिशा में आगे बढ़ते हुए 106 अतिरेक नदियों को National Waterways के रूप में विकसित करने का काम इस दिशा में हम आगे बढ़ रहे हैं। भारत में Aviation Sector भी नई संभावनाएं लेकर आ रहा है। पिछले तीन वर्षों में Domestic Flyers की संख्या में हवाई जहाज में सफर करने वालों की संख्या में लगभग तीन करोड़ यात्रियों की वृद्धि हुई है। Aviation Sector को मजबूत करने के लिए पहली बार National Aviation Policy हमने बनाई है। मध्यम वर्ग के जीवन में 'उड़ान योजना' के माध्यम से बदलाव लाया जा रहा है। इस योजना के तहत देश के 70 छोटे शहरों को जोड़ा जा रहा है ताकि देश का आम नागरिक कभी सस्ती हवाई सेवाओं को भी वो फायदा उठा सके।

वर्तमान रेल व्यवस्था को सुधारने और आधुनिक तकनीक के आधार पर नये रेल नेटवर्क के निर्माण दोनों पर बराबर ध्यान दिया जा रहा है। हमने रेलवे ट्रैक, उसको doubling करना, electrification करना इस काम को भी तेजी से आगे बढ़ाया है और पहले से ज्यादा तेज गति से काम हो रहा है जितना निवेश रेलवे में अभी ये सरकार कर रही है, उतना इसके पहले कभी नहीं हुआ है। निवेश बढ़ाने के साथ ही अब दशकों से अटके हुए Projects को पूरा करने पर भी बल दिया जा रहा है। भारतीय रेलवे की क्षमता में बढ़ोतरी और माल ढुलाई में आसानी के लिए भारत सरकार लगातार प्रयासरत है।

मुंबई के जवाहरलाल पोर्ट से लेकर यूपी के दादरी तक Western Dedicated Freight Corridor बनाया जा रहा है। इसी तरह कोलकता से लुधियाना तक Eastern Dedicated Freight Corridor का निर्माण किया जा रहा है। अगले तीन साढ़े तीन साल में ये प्रोजेक्ट पूरा कर लेने की हम कोशिश कर रहे हैं। ये प्रोजेक्ट पूरा होने के बाद जो congestion है वो कम होगी, यात्री ट्रेनों का समय बचेगा और रेलवे की transport क्षमता भी बढ़ेगी।

साथियों, High-speed Rail Project आधुनिक रेलवे निर्माण के vision का integral part है। मुझे बहुत खुशी है कि आज इसका भूमि पूजन हुआ है। और मेरे प्यारे भाईयों और बहनों मेरे प्यारे देशवासियों, भूमि पूजन आज हुआ है। आजादी के 70 सत्तर साल हुए हैं, साबरमती आश्रम की शताब्दी मना रहे हैं, मन में इच्छा है सपना है, जब आजादी के 75 साल हों 2022-23 में ये हम रेल का काम पूरा करें और जैसा आबे-सान ने कहा हम दोनों बैठकर के उसमें यात्रा करके उसका उद्घाटन करें। जापान और भारत ने एक बार ठान ली तो ये भी हम करके रहेंगे ये मैं आपको विश्वास दिलाता हूं।

इस Project के साथ-साथ High-speed Rail Experts तैयार करने के लिए बड़ोदरा में High-speed Training Institute की भी स्थापना की जा रही है। ये बहुत महत्वपूर्ण प्रोजेक्ट में मानता हूं। बड़ोदरा वर्षों से रेलवे की एक बहुत बड़ी महत्वपूर्ण इकाई रही है। अब जापान वहां पर High-speed Railway के लिए जिस प्रकार के manpower की जरूरत है, नई टेक्नोलॉजी को सिखाने की आवश्यकता है, भारत के नौजवानों को विशेषकर गुजरात के नौजवानों को ये अवसर मिलेगा और जब Human Resource Skill Development होता है तो देश की ताकत अनेक गुना बढ़ जाती है। जो एक High-speed से भी ज्यादा होती है, वो काम अब बड़ोदरा की धरती पर होगा, जापान की मदद से होगा और आधुनिक से

आधुनिक रेलवे इंजीनियरिंग का काम है, उसके लिए भारत के नौजवानों को तैयार किया जाएगा। आप कल्पना कर सकते हैं कि नये भारत के लिए कितने बड़े सामर्थ्यवान मानव बल को तैयार करने का काम इस एक Institution के द्वारा होने वाला है। मेरे लिए जितना महत्व High-speed Railway के भूमि पूजन का है उससे भी कई महत्व देश के नौजवानों को ये आधुनिक training देने के लिए ये जो Institution का भूमि पूजन हो रहा है इसमें है और ये 21वीं सदी के भारत की मजबूत नींव डालने का काम इससे होने वाला है।

मैं इस प्रोजेक्ट से जुड़े भारत और जापान के सभी प्रतिनिधियों का, कर्मचारियों का एक बार फिर बहुत-बहुत बधाई देता हूं, उनका धन्यवाद करता हूं। उनके प्रयास से ये प्रोजेक्ट यहां तक पहुंचा है। और अब जमीन पर इसका असली काम शुरू हो रहा है। मुझे पूरा-पूरा भरोसा है कि मिलकर इस प्रोजेक्ट को समय से कम समय में पूरा करने प्रयास करेंगे और करके दिखाएंगे। एक बार फिर से जापान के प्रधानमंत्री और मेरे परम मित्र श्रीमान शिंजो अबे, श्रीमान आबे-सान उनका मैं हृदय से आभार व्यक्त करता हूं। और भारत का ट्रेन नेटवर्क इतना बड़ा है इतना बड़ा है कि जापान की जो कुल जनसंख्या है। हमारे यहां एक सप्ताह में जापान की जितनी जनसंख्या है, इतनी रेलवे में सफर करते हैं। कितनी विशालता कितनी क्षमता, हमारे पास scope है, speed है, आपके skill है और हम मिलकर के इस नये भारत को नई गति देने की दिशा में आगे बढ़ेंगे।

मैं फिर एक बार गुजरातवासियों ने जो भव्य स्वागत सम्मान किया। जापान के प्रधानमंत्री की शोभा के अनुरूप किया इसलिए गुजरात का हृदय से आभार व्यक्त करता हूं। मैं गुजरात और महाराष्ट्र सरकार दोनों को बधाई देता हूं, इस काम के अंदर इन दोनों सरकारों ने मिलकर के भारत सरकार और जापान सरकार के साथ मिलकर के सारे विश्व को एक के बाद एक High-speed से निपटाते गए और पूरी व्यवस्था को आगे बढ़ाया और इसलिए मैं गुजरात के मुख्यमंत्री का, महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री का, उनका भी हृदय से आभार व्यक्त करता हूं।

बहुत-बहुत धन्यवाद।

Bullet Train - रफ्तार की तरफ नए भारत के बढ़ते कदम #BulletTrain4Growth



अतुल तिवारी, अमित कुमार, ममता

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

22-अक्टूबर-2017 18:40 IST

घोघा-दहेज फेरी सेवा के उद्घाटन के पश्चात् दहेज में प्रधानमंत्री द्वारा जनसभा को दिए गये संबोधन का मूल पाठ

आप सबको नए साल की बहुत बहुत बधाई! दीवाली से पहले हमारे यहाँ बीता हुआ साल कहा जाता है, और दीवाली नया साल कहलाता है। यानि पिछले साल मैं आया था और नए साल में फिर से आया हूँ।

हमारा दहेज यानि एक प्रकार से लघु भारत है। हिंदुस्तान का कोई भी राज्य ऐसा नहीं होगा जिसके नवयुवान यहाँ के काम में, इस क्षेत्र में जुड़ा हुआ न हो। यानि एक प्रकार से आज दहेज में जो मैं बात करूंगा वो समग्र हिंदुस्तान उसको ध्यान में लेने वाली है। और इसीलिए आप सबकी क्षमा माँगते हुए मैं आजकी अपनी बात हिंदी में और गुजराती में मिलाकर के चलाऊंगा।

मेरे प्यारे भाइयो और बहनों।

साथियों, जैसा अनुभव किसान को अपनी लहलहाती फसल को देख करके होता है; जैसा अनुभव कुम्हार को सुंदर सा घड़ा, मिट्टी के बर्तन; मिट्टी के दीए बनाता है, तो बनने के बाद उसे जैसा सुखद अनुभव होता है; जैसा अनुभव किसी बुनकर को सुंदर सी कालीन बनाकर उसके मन को जो प्रसन्नता होती है; वैसा ही अनुभव इस वक्त मुझे हो रहा है। ऐसा लग रहा है जैसे अब से कुछ देर पहले, मैं सवा सौ करोड़ देशवासियों की इच्छाओं को, उनकी भावनाओं को जी करके यहां आया हूँ।

घोघा से दहेज के रास्ते में समंदर पर बिताए हुए एक-एक पल के दौरान, मैं यही सोचता रहा कि बीतता हुआ ये समय एक नया इतिहास लिख रहा है, एक नए भविष्य के दरवाजे खोल रहा है। इसी द्वार से चलकर हम 'New India' का मजबूत आधार रखेंगे, New India का सपना साकार करेंगे। देश की जनशक्ति से ही और उसके सही इस्तेमाल करने का सपना, सरदार पटेल से ले करके डॉक्टर बाबा साहेब अम्बेडकर तक सभी ने देखा था। आज हमने उनके सपने से जुड़े हुए एक पड़ाव को पार कर लिया है।

घोघा-दहेज के बीच ये ferry सौराष्ट्र और दक्षिण गुजरात के करोड़ों-करोड़ों लोगों की जिंदगी को न सिर्फ आसान बनाएगा, बल्कि उन्हें और निकट ले आएगा।

आप ज़रा सोचिए जिस यात्रा में सात से आठ घंटे लगते हो, और वह यात्रा आरामदेह तरीके से घंटे सवा घंटे में पूरी जाए इससे बड़ा फायदा कौनसा? हमारे यहाँ कहा जाता है time is money . समय मूल्यवान होता है, सात आठ घंटे रास्ते पर जाने के बदले एक घंटा सवा घंटे में आप पहुँच जाओ। और अब तो ज्योतिग्राम योजना के बाद हिरे की चक्कियाँ भावनगर अमरेली जिले के गाँव में गई है, हमारा रत्नकलाकर वहाँ डायमंड घिसे, सुबह में वो पुड़िया लेके बैठे और सीधा पहुँचाए सूरत में, कच्चा माल लेके फिर से पहुँचे फिर से माल दे आए, आप ज़रा सोचिए किस तरह उद्योग धंधा व्यापार कैसे विकसित होगा इस एक व्यवस्था के कारण उसका आप अंदाज़ा लगा सकते हैं।

इस ferry service से पूरे क्षेत्र में सामाजिक-आर्थिक विकास का एक नया दौर शुरू होगा। रोजगार को जो नौजवान इस व्यवस्था का फायदा उठाएंगे; रोजगार के नए अवसर उपलब्ध होंगे। Coastal Shipping और Coastal Tourism का भी एक नया अध्याय इसके साथ जुड़ने वाला है। भविष्य में हम सब इस ferry service से.... और यहां आए हुए लोग ध्यान से सुनें, भविष्य में हम इस ferry service से हजीरा, पीपावाओ, जाफराबाद, दमनदीव, इन सभी महत्वपूर्ण जगहों के साथ ferry service जुड़ सकती है।

मुझे बताया गया है कि सरकार की तैयारी आने वाले वर्षों में इस ferry service को सूरत से आगे हजीरा और फिर मुम्बई तक ले जाने की योजना है। कच्छ की खाड़ी में भी इस तरह प्रोजेक्ट शुरू करके किए जाने की चर्चा चल रही है। उन्होंने काफी काम आगे बढ़ाया है। और मैं राज्य सरकार को उनके इन प्रयासों के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएं देता हूँ और भारत सरकार की तरफ से पूरा सहयोग मिलेगा, इसका मैं विश्वास दिलाता हूँ।

सरकार का ये प्रयास दहेज समेत पूरे दक्षिण गुजरात के विकास के लिए सरकार की प्रतिबद्धता का एक जीता-जागता उदाहरण है। भड़च समेत दक्षिण गुजरात में औद्योगिक विकास की गति को तेज करने के लिए दहेज और हजीरा जैसे केन्द्रों पर हमने विशेष ध्यान केन्द्रित किया है। Petroleum, Chemicals & Petrochemicals Investment Regions की स्थापना के साथ ही rail network, road linkages, उस पर जो काम हुआ है, शायद पहले किसी ने सोचा तक नहीं होगा।

हजीरा में भी infrastructure के विकास पर जोर लगाया गया है। आने वाले वर्षों में दिल्ली-मुम्बई Industrial Corridor का लाभ भी इन क्षेत्रों को मिलने वाला है। गुजरात का maritime development पूरे देश के लिए एक model है। मुझे उम्मीद है कि Ro-Ro ferry service का project भी दूसरे राज्यों के लिए एक model project की तरह काम करेगा।

हमने जिस तरह वर्षों की मेहनत के बाद इस तरह के project में आने वाली दिक्कतों को समझा, उसे दूर किया, उन दिक्कतों कम से कम आएँ, भविष्य में अगर नया project बनाना है; उस दिशा में गुजरात ने बहुत बड़ा काम किया है।

साथियों, आज से नहीं सैंकड़ों वर्षों से जल-परिवहन के मामले में भारत दूसरे देशों से बहुत आगे रहा था। हमारी technique दूसरे देशों से कहीं ज्यादा श्रेष्ठ हुआ करती थी। लेकिन ये भी सही है कि गुलामी के बड़े कालखंड के दौरान हमने अपनी श्रेष्ठताओं को अपने इतिहास से सीखना धीरे-धीरे कम कर दिया, भूलते चले गए। नए innovation कम होने के साथ ही जो क्षमताएं थीं, वो भी धीरे-धीरे इतिहास का हिस्सा बन गईं। वरना जिस देश की navigation क्षमताओं का लोहा सदियों से पूरी दुनिया मानती रही हो, उसी देश में स्वतंत्रता के बाद water transport पूरी तरह से नजरअंदाज कर दिया गया, भुला दिया गया।

साथियों, आज भी भारत में road transport का हिस्सा 55 प्रतिशत है, रेलवे माल ढुलाई का 35 प्रतिशत वहन करती है और Waterways क्योंकि सबसे सस्ता है, वो सिर्फ 5 या 6 percent है। जबकि तीसरे देशों में Waterways और Coastal Transport की हिस्सेदारी करीब-करीब 30 प्रतिशत से भी ज्यादा हुआ करती है। यही हमारी सच्चाई, यही हमारी चुनौती है और यही स्थिति हमें बदलने का संकल्प ले करके आगे बढ़ना है।

आज जान करके हैरान हो जाओगे कि देश की अर्थव्यवस्था पर logistic का बोझ 18 प्रतिशत तक है। यानी सामान को देश के एक हिस्से से दूसरे हिस्से तक ले जाने पर दूसरे देशों की अपेक्षा हमारे देश में खर्च ज्यादा होता है। और उसके कारण गरीब व्यक्ति को जो चीजों की जरूरत होती है, वो transport के कारण भी महंगी हो जाती हैं। अगर water transport को बढ़ावा देकर हम cost of logistic को लगभग आधा कर सकते हैं और ऐसा करने के लिए हमारे पास साधन, संसाधन, सुविधाएं और सामर्थ्य, सब कुछ मौजूद है।

साथियों हमारे देश में 7,500 किलोमीटर का समुद्री तट और 14,500 किलोमीटर का Internal Waterway, यानी नदियों द्वारा मार्ग उपलब्ध है। एक तरह से मां भारती ने हमें पहले से ही 21,000 किलोमीटर के जलमार्ग का आशीर्वाद देके रखा हुआ है। वर्षों तक हम इस खजाने पर चौकड़ी मारकर बैठे रहे और ये समझ ही नहीं पाए कि इसका इस्तेमाल कैसे करें।

आप ये जानकर चौंक जाएंगे कि हमारे यहां पहली Port Policy, 1995 में बनी। देश आजाद हुआ 1947 में और बंदरों की नीति, 1995, कितना विलंब कर दिया। उसके पहले port के विकास के लिए एक लंबे vision के साथ काम नहीं हो रहा था। बस चीजें चल रही थीं और ये सच है कि इसकी वजह से देश को अरबों-खरबों का आर्थिक नुकसान भी उठाना पड़ा।

आपको एक उदाहरण देता हूँ- अगर जलमार्ग के माध्यम से हम कोयले को transportation करना चाहते हैं, तो उसका खर्च आता है प्रतिटन किलोमीटर 20 पैसे। वहीं जब इसे उसी कोयले को रेल के माध्यम से ले जाते हैं तो यही कीमत हो जाती है सवा रुपया, यानी 20 पैसे के सामने सवा हो जाता है, और आप विचार कीजिए कि रोड़ मार्ग से जाएंगे तो किना गुना बढ़ जाएगा? आप बताइए हमें सस्ते माध्यम से कोयले की ढुलाई करनी चाहिए या नहीं? आप जानकर हैरान रह जाओगे कि आज भी कोयले की ढुलाई का 90 प्रतिशत रेल के द्वारा ही हो रहा है। दशकों से बनी हुई इस व्यवस्था को बदलना हमने ठान लिया है। और इसके लिए सरकार लगातार नए-नए initiative ले रही है।

साथियो, जब हम नया घर खरीदते हैं तो देखते हैं कि उस घर की दूसरे क्षेत्रों के साथ connectivity कैसी है, रोड़ है कि नहीं है, रेल है कि नहीं है, जाना है तो बस मिलती है कि नहीं मिलती है। जब हम नया business शुरू करते हैं- तो भी देखते हैं कि इस इलाके में connectivity कैसी है। उस इलाके में सामान को लाने-ले जाने में कोई दिक्कत तो नहीं आएगी?

जब हमारी सामान्य approach यही रहती है तो फिर एक सवाल ये भी उठता है कि आखिर हमारे उद्योग समुद्र तटों से दूर क्यों जगाए जाएं? अगर इंडस्ट्री का कच्चा माल और तैयार किया हुआ माल, अगर बंदरों की connectivity पर निर्भर है तो क्या ये सही नहीं होगा कि समुद्र तटों के पास industrial coastal भी विकसित किए जाएं। इससे न केवल logistic की कीमत में कमी आएगी बल्कि ease of doing business में भी मददगार साबित होगा।

जो देश के भीतर जरूरत है उसके उद्योग देश के भीतर कहीं भी लग सकते हैं और लगाने भी चाहिए। लेकिन जो दूसरे देशों में भेजना है, export करना है, वो जब समुद्री तट पर करते हैं तो ज्यादा सुविधाजनक हो जाता है, ज्यादा मुनाफा मिलता है।

साथियों, transport की दुनिया में कहा जाता है कि अगर आप आने वाले कल की दिक्कतों को आज सुलझा रहे हैं तो आप पहले ही बहुत देर कर चुके हैं। आप सोचिए, आपके आसपास किसी सड़क पर हर रोज जाम लगता हो और कोई तय करे कि अब वहां flyover बनाया जाएगा, ये flyover जब बन करके तैयार होगा तब तक उस इलाके में गाड़ियों की संख्या इतनी बढ़ जाती है कि उस flyover पर भी जाम लगने लग जाता है। हमारे देश में यही होता रहा है। और इसलिए transport sector में सरकार अभी की जरूरतों के साथ ही भविष्य की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए भी काम कर रही है। हमारा मंत्र है P for P, Ports for prosperity. हमारे बंदर समृद्धि के प्रवेश द्वार। सागरमाला जैसा project इसी vision की एक झलक है। इस project पर twenty - thirty five तक की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए हम काम कर रहे हैं। इसके तहत सरकार अब से लेकर 2035 को ध्यान में रखते हुए 400 से ज्यादा परियोजनाओं पर आज बहुत बड़ा investment कर रही है।

इन अलग-अलग परियोजनाओं पर 8 लाख करोड़ रुपये से ज्यादा निवेश करने की तैयारी है। सागरमाला प्रोजेक्ट निश्चित तौर पर New India का बहुत बड़ा आधार बनेगा।

साथियों, समुद्र के जरिए दूसरे देशों से मजबूत संबंध स्थापित करने के लिए हमें और आधुनिक ports की आवश्यकता है। हमारी economy के लिए ports फेफड़ों की तरह हैं। अगर ports बीमार हो जाएं, क्षमता के मुताबिक काम न करें तो हम बहुत व्यापार भी नहीं कर पाएंगे। इसी तरह जैसे शरीर में फेफड़ों द्वारा खींची गई ऑक्सीजन हृदय द्वारा pump करके नसों के माध्यम से अलग-अलग स्थानों पर पहुंचाई जाती है, वैसे ही economy में ये भूमिका Railways, Highways, Airways और Waterways के द्वारा होती है। अगर नसों में खून की सप्लाई कम हो जाए, ऑक्सीजन कम हो जाए तो शरीर कमजोर हो जाता है। ऐसे ही connectivity सही न हो तो देश का आर्थिक विकास भी कमजोर पड़ने लगता है। और इसलिए infrastructure और connectivity दो ऐसे क्षेत्र हैं जिन पर ये सरकार अधिक से अधिक शक्ति लगा रही है।

साथियों, सरकार के प्रयासों का ही नतीजा है कि पिछले तीन वर्षों में port sector में बहुत बड़ा परिवर्तन आया है। अभी तक का सबसे ज्यादा capacity addition पिछले दो-तीन वर्षों में ही हुआ है। जो port और सरकारी कम्पनियां घाटे में चल रही थीं, उनमें भी परिस्थिति बदल गई है। सरकार का ध्यान coastal service से जुड़े skill development पर भी है।

एक अनुमान के मुताबिक अकेले सागरमाला प्रोजेक्ट से आने वाले समय में देश के भिन्न-भिन्न भाग पर एक करोड़ नई नौकरियों के अवसर की संभावनाएं हैं। हम इस approach के साथ काम कर रहे हैं कि transportation का पूरा frame work आधुनिक और integrated हो।

आजकल आप कई जगहों पर traffic जाम देखते हैं। इसी तरह हमारे ports में भी जाम लग जाता है। ports में लगने वाले जाम की वजह से logistic cost बढ़ती है, waiting time बढ़ता है। जिस तरह हम traffic में फंसने के बाद सिर्फ इंतजार करते रह जाते हैं, कोई productive काम नहीं कर पाते; उसी तरह समुद्र में खड़े जहाज भी सामान उतारने और सामान चढ़ाने के इंतजार में खड़े रह जाते हैं। और सिर्फ वो vessel खड़ा नहीं रहता है, पूरी economy ठहर जाती है। यह बहुत आवश्यक है कि ports का आधुनिकीकरण हो, bottlenecks हटाए जाएं।

सागरमाला प्रोजेक्ट का एक और पहलू है और वो है Blue Economy. पहले लोग सिर्फ ocean economy के बारे में बात करते थे लेकिन हम Blue Economy के बारे में बात करते हैं। blue economy यानी economy और ecology का गठजोड़। Blue Economy आर्थिक गतिविधियों के साथ-साथ ही समुद्र से जुड़े Eco-System को भी बढ़ावा देती है।

अगर 18वीं और 19वीं शताब्दी में औद्योगिक क्रांति जमीन पर हुई तो 21वीं शताब्दी में औद्योगिक क्रांति समुद्र के

माध्यम से होगी, Blue Revolution के जरिए होगी।

साथियों, हमारी आज की आवश्यकताओं और चुनौतियों को देखते हुए ये बहुत आवश्यक है कि हम देश की सामुद्रिक शक्ति का ज्यादा से ज्यादा इस्तेमाल करें। Blue economy की क्षमताओं का ज्यादा इस्तेमाल New India का आधार बनेगा।

खाद्य सुरक्षा के लिए Blue Economy का इस्तेमाल किया जा सकता है। जैसे अगर हमारे मछुआरे भाई sea bead की खेती करें, उसमें value-addition करें तो इससे उनकी आय में भी इजाफा हो सकता है। ऐसे ही Blue Economy, ऊर्जा के क्षेत्र में mining के क्षेत्र में, tourism के क्षेत्र में New India का एक बहुत बड़ा आधार बन सकती है।

साथियों, ये सरकार देश में एक नई कार्य संस्कृति विकसित कर रही है। एक ऐसी कार्य-संस्कृति जो जवाबदेह हो, पारदर्शी हो। आज इसी कार्य-संस्कृति की वजह से योजनाओं पर तेजी से काम हो रहा है। आज देश में दोगुनी गति से सड़के बन रही हैं, दोगुनी गति से रेल लाइनें बिछ रही हैं।

पहले एक दिन में जितने रस्ते बनते थे उससे डबल बनते हैं, पहले एक दिनमें जितनी रेल बिछाई जाती थी उससे दुगुनी अभी डलती है।

योजनाओं को समय पर पूरा करने के लिए drone से लेकर satellite तक से monitoring करने की व्यवस्था हो रही है। कोई तो वजह होगी कि अब आपको passport इतना जल्दी मिल जाता है। कोई तो वजह होगी कि अब आपको गैस का सिलेंडर इतनी आसानी से मिल जाता है। कोई तो वजह होगी कि अब आपको income tax refund के लिए महीनों इंतजार नहीं करना पड़ता है। ये बदलाव आपकी जिंदगी में आ रहा है और इसके पीछे बड़ी वजह है, सरकार की कार्य-संस्कृति में हमने जो बदलाव लाया है। एक ऐसी कार्य-संस्कृति है जो गरीबों को, मध्यम वर्ग को, तकनीक की मदद से उसका हक दिला रही है।

गुजरात में आपने जो सिखाया है, वो अनुभव मुझे दिल्ली में बहुत काम आ रहा है। खोज-खोजकर फाइलें निकलवा रहा हूँ और जो परियोजनाएं दशकों से अटकी हुई हैं उन्हें पूरा करवा रहा हूँ। हमने एक व्यवस्था विकसित की है- 'प्रगति'। इसके माध्यम से अब तक 9 लाख करोड़ रुपये से ज्यादा की परियोजनाओं की समीक्षा की गई है। प्रगति में समीक्षा होने के बाद चार-चार दशक से अटके हुए project अब तेजी से पूरे होने की तरफ आगे बढ़ रहे हैं।

ये सरकार देश में ईमानदार अर्थव्यवस्था और ईमानदार सामाजिक अर्थव्यवस्था स्थापित करने के लिए प्रयास कर रही है। नोटबंदी ने काले धन को न सिर्फ तिजोरी से बाहर निकालकर बैंक में पहुंचाया है, बल्कि देश को ऐसे-ऐसे सबूत भी सौंपे हैं जिससे एक अभूतपूर्व स्वच्छता अभियान शुरू होना संभव हुआ है।

इसी तरह GST से भी देश में एक नया Business Culture मिल रहा है। हमें मालूम है पहले जो लोग ट्रक लेकर जाते हैं, check post पर घंटों खड़े रहना पड़ता था। GST आने के बाद सारे check-post गए। जो ट्रक पांच दिन में पहुंचता था वो आज तीन दिन में पहुंचता है। सामान ले जाने, लाने का खर्चा कम हो गया और हजारों करोड़ रुपये जो check-post पर जाते थे, उसमें भी भ्रष्टाचार पनपता था। वो सारी चीजें GST आने के कारण बंद हो गया। अब मुझे बताइए, अब तक जिन्होंने ठेकेदारी में लूटा था वो मोदी से नाराज होंगे कि नहीं होंगे? उनको मोदी पर गुस्सा आएगा कि नहीं आगा? लेकिन देश के नागरिक को भला होना चाहिए कि नहीं होना चाहिए? देश के नागरिकों को लाभ होना चाहिए कि नहीं होना चाहिए?

एक ऐसा Business Culture जिसमें ईमानदारी से सारा कारोबार होता है और ईमानदारी के दम पर ही कमाई की जाती है। और मेरा अनुभव है कोई व्यापारी चोरी करना नहीं चाहता है। लेकिन कुछ कानून, नियम, अफसर, राजनेता; उसको उस पर धक्का मारते हैं, बेचारे को मजबूर कर देते हैं। हम उसको ईमानदारी का वातावरण देने के लिए काम कर रहे हैं।

आप देखिए GST से जुड़ने वाले व्यापारियों की संख्या लगातार बढ़ रही है। GST लागू होने के बाद indirect tax के दायरे में 27 लाख नागरिक जुड़ गए हैं।

साथियों, मुझे पता है कि मुख्यधारा में लौट रहे कुछ व्यापारियों को डर लग रहा है कि कहीं उनके पुराने रिकॉर्ड तो नहीं खोले जाएंगे? जो कोई वर्ग ईमानदारी से देश के विकास में शामिल हो रहा है, मुख्यधारा में आ रहा है, उसे मैं ये पूरा भरोसा दिलाना चाहता हूँ कि उनकी पुरानी चीजें खोल करके किसी अफसर को परेशान करने का हक नहीं दिया जाएगा।

भाइयो, बहनों, तमाम सुधारों और कड़े फैसलों के बावजूद देश की अर्थव्यवस्था पटरी पर आए सही दिशा में है। हाल में

आए आंकड़ों को देखें तो कोयले, बिजली, स्टील, Natural Gas, इन सबके production में काफी वृद्धि हुई। विदेशी investor भारत में record निवेश कर रहे हैं। भारत का Foreign Exchange Reserve लगभग 30 हजार करोड़ डॉलर से बढ़कर 40 हजार करोड़ डॉलर को पार कर गया है।

कई जानकारों ने इस बात पर सहमति जताई है कि देश की अर्थव्यवस्था के fundamental काफी मजबूत हैं, strong हैं। हमने reform sector में महत्वपूर्ण फैसले लिए हैं और ये प्रक्रिया लगातार जारी रहेगी। देश की final sustainability को भी maintain रखा जाएगा। निवेश बढ़ाने और आर्थिक विकास को गति देने के लिए हम हर आवश्यक कदम उठाते रहेंगे।

साथियों, ये बदलती हुई व्यवस्थाओं का दौर है। संकल्प से सिद्धि का दौर है। हम सभी को New India के निर्माण के लिए संकल्प लेना होगा, उसे सिद्ध करना होगा। आज यहां Ghogha-Dahej ferry service के माध्यम से New India के एक नए साधन की शुरुआत हुई है।

और एक बात पक्की है भाईयों, ये फेरी सर्विस यानि अभी ही आएगी दूसरी जाएगी लेकिन वो दिन दूर नहीं है जब आधे आधे घंटे पर ये फेरी सर्विस चल रही होगी। बसों जैसे दौड़ती है न वैसे। और आपको अपनी मोटर लेके ही अंदर चढ़ जाना है, अपनी मोटर में ही बैठे रहना है, और उतरकर फिर मोटर पर निकल पड़ना है। इस तरफ गोवा तक जा पाएंगे, तरफ कच्छ तक जा पाएंगे। ऐसी स्थिति दूर नहीं होगी। इतना ही नहीं, हमारे सुरती लाला, इस सुरती लाला को बच्चे का जन्मदिन मनाना हो, तो ये फेरी सर्विस बुक करवा के जन्मदिन भी वहाँ समुन्दर के बीच में जा करके मनाया जा सकता है।

इसकी वजह से गुजरात में क्रूज टूरिज्म भी बढ़ेगा। बीच टूरिज्म भी बढ़ेगा, और टूरिज्म के कारण, गरीब से गरीब इंसान को भी रोजगार मिलने लगेगा। हमारे यहाँ भाड़भूत बैरेज का जो काम करने के लिए मैं कुछ समय पहले वहाँ आया था, उसका शिलान्यास करके गया था, उसकी वजह से रोड, काफी रास्ता कट जानेवाला है। दूसरा लाभ इसका मिलने वाला है। आप कल्पना कर सकते हैं कि ये एक व्यवस्था और ये व्यवस्था कैसी है, मैं जब शाला में पढ़ता था तबसे सुनता आ रहा हूँ कि घोघा दहेज फेरी सर्विस शुरू होने वाली है। मैं शाला में पढ़ता था। कितने ही मुख्यमंत्री आए और गए, बातें करते रहे, ये हम लोग हैं जिन्होंने तय किए हुए काम पूरे करके आपको दे रहे हैं।

भरुच, अंकलेश्वर और वापी के लोग अच्छे से जानते हैं कि एक ऐसी सरकार दिल्ली में बैठी थी जिसने पर्यावरण के नाम पर गुजरात के समुद्र तट के सभी उद्योगों में ताले लगा दिए, लोगों को बेरोजगार कर दिए थे, और इसीलिए भाईयों और बहनो, हम एक बदलाव लाने के संकल्प के साथ निकले हैं, क्या कारण है कि पूरा सौराष्ट्र खाली हो चुका था, कच्छ खाली हो गया था, लोग अपने घर बार छोड़कर के सूरत, मुंबई जहाँ भी जगह मिले, झोपड़पट्टी में जगह मिले जिंदगी जी के, मजदूरी करके दिन बिताते थे, समुद्र इतना बड़ा विशाल लेकिन वह समुद्र उन्हें नमकीन लगा। समुंदर भी एक शक्ति है, उसका उपयोग हो सकता है, वैसी विज्ञान का आभाव था, जिसकी वजहसे ये काठियावाड़ खाली हो रहा था, अबका युग गुजरात के समुद्र तट के विकास का युग आ रहा है। भविष्य में गुजरात के समुद्र तट पर कई नए शहर विकसित होने वाले हैं। श्री कृष्ण के समय में समुद्र तट पर शहर बने थे, उसके बाद 21वीं सदी में शहर, तटों पर गुजरात की धरती पर, अपनी नज़र के सामने आप देखेंगे, वो दिन दूर नहीं है। विकास इस दिशा में होता है भाई, और इसलिए विकास का व्रत लेकर के निकले हुए मेरे लोग, विकास के व्रतस्थ लोग हैं हम, हमें मध्यम वर्ग के मानवी को जितनी ऊंचाई पर जाना हो उसके अवसर हमें उन्हें देने हैं, हमें गरीब को मुसीबत से बाहर लाने के लिए उसका हाथ पकड़कर के चलना है। हमें गुजरात को और हिंदुस्तान को दुनिया के विकास की लाइन में खड़ा करने के लिए जो भी मेहनत करनी पड़े वो मेहनत करने का संकल्प लेकर के निकले हुए लोग हैं। और उसी संकल्प के साथ हम सब आगे बढ़ें।

फिर एक बार घोघा हजीरा रो रो फेरी सर्विस, आज दहेज कल हजीरा, वो दिन दूर नहीं होगा और उसका लाभ दक्षिण गुजरात को सौराष्ट्र के साथ जोड़ना मतलब सुबह निकले और शामको काम खत्म करके वापिस आ जाएं और कोई थकान भी न लगे, ऐसी व्यवस्था हमें मिली है।

आप सभी को मैं एक बार फिर बहुत-बहुत शुभकामनाओं के साथ इसका भरपूर फायदा लेने के लिए निमंत्रित करता हूँ।

भारत माता की जय

भारत माता की जय भारत माता की जय

बहुत-बहुत धन्यवाद

अतुल तिवारी, अमित कुमार, निर्मल शर्मा

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

22-अक्टूबर-2017 14:21 IST

गुजरात के घोघा में घोघा-दहेज रो-रो फेरी सेवा तथा पशु-आहार निकाय के उद्घाटन समारोह में प्रधानमंत्री के भाषण का मूल पाठ

आप सभी को नये वर्ष की ढेर सारी शुभकामनाएं। दिवाली बाद गुजरात नूतन संकल्प करने का आदी है, नये आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ने का आदी है और दिवाली बाद तुरंत ही भावनगर घोघा की धरती पर आकर समग्र गुजरात नूतन वर्ष के अभिनंदन करने का मौका मिला। गुजरात सरकार का आभारी हूं और जीवन में धन्यता का अनुभव करता हूं। घोघा के भाईयों और भावनगर से आये भाईयों, आज का यह कार्यक्रम भले ही घोघा - दहेज के बीच का हो पर यह समय हिन्दुस्तान को स्पर्श करता हुआ कार्यक्रम है। एक प्रकार से साउथ-ईस्ट एशिया में एक नये सिमाचिन्ह रूप कार्यक्रम है और इसलिए स्वाभाविक तौर पर देश के लोगों की भी इच्छा आज के यह कार्यक्रम के विषय में जानने की हो वह स्वाभाविक है। और इसलिए आप सब की क्षमा के साथ आज मैं थोड़ी बातें हिन्दी भाषा में करूंगा और थोड़ी हमारी गुजराती में।

यहां उपस्थित विशाल संख्या में पधारे हुए मेरे प्यारे भाईयो और बहनों,

आप सबको दीपावली और नवीन वर्ष की शुभकामनाओं के साथ, अभी हम लोगों ने भाई दूज का त्यौहार मनाया नागपंचमी के त्यौहार का इंतजार कर रहे हैं और नये संकल्प के साथ, नये भारत, नये गुजरात के निर्माण की दिशा में आज एक अनमोल उपहार घोघा की धरती से पूरे हिन्दुस्तान को मिल रहा है। आज घोघा दहेज के बीच Ro-Ro ferry service का प्रथम चरण का शुभारंभ किया जा रहा है। ये भारत में अपनी तरह का पहला project है। यही दक्षिण पूर्वी एशिया का भी ये इतना बड़ा पहला project है। मैं गुजरात के लोगों को, यहां की सरकार को, 650 करोड़ रूपयों का ये project, अनेक आधुनिक तकनीक के साथ परिपूर्ण करने के लिए बहुत-बहुत बधाई देता हूं। इस project की शुरुआत के साथ साढ़े छः करोड़ गुजरातियों का एक बहुत बड़ा सपना पूरा हुआ है।

भाईयो बहनो मैं जब पाठशाला में पढता था तब हमारे यहां शाला में एक पद्धति थी रोज के जो समाचार होते थे वह बालकों को ब्लैकबोर्ड पर लिखना होता था। और जब एसेम्बली होती थी तब एक विद्यार्थी जिसकी बारी हो उसको समाचार पढना होता है। बचपन में स्कूल में यह सुना था, और उस समय बलवंतराय मेहता मुख्यमंत्री होंगे, सुना था कि गुजरात में घोघा-दहेज रो-रो फेरी शुरू होने वाली है। मैं जब शाला में पढता था तब सुना था की गुजरात में घोघा - दहेज रो-रो फेरी सर्विस शुरू होने वाली है। तनी सारी सरकारें आ कर के गई, भावनगर में से भी कदावर नेता आकर के गये, पर अच्छे काम सारे मेरे नसीब में ही लिखे हुए है।

अभी इस मंच से मुझे सर्वोत्तम डेयरी cattle feed plant के उद्घाटन का भी अवसर मिला है। यह डेरी उद्योग, आपको जानकर आघात लगेगा, गुजरात में भूतकाल में ऐसी सरकार थी की जिन्होंने कच्छ-काठियावाड में डेरी ना बने ऐसे उलटे नियम बनाये थे। हमने आकर नियमों को बदला और इसके कारण आज कच्छ और सौराष्ट्र के जिले-जिले में डेरीयां बनी। कहीं तीन लाख लीटर दूध, कहीं चार लाख लीटर दूध, कहीं ग्यारह लाख लीटर दूध, यहां के पशुपालकों को, यहां के किसानों को दूध के पूरे पैसे मिलने लगे और खेती में अगर कोई दिन मुश्किल आये तो दूध के भरोसे बारह महीने निकल जाये वह काम इस डेरी के विकास से हुआ है। आज तकरीबन 65 करोड़ रुपये के खर्च से भावनगर में सर्वोत्तम डेरी द्वारा पशु आहार के लिए वैज्ञानिक अभियान अब शुरू हो रहा है। पशुपालन उसमें पशु आहार का अधिक महत्व है। उत्तम से उत्तम तरीके से देखभाल हो पशुओं की, उत्तम प्रकार का पशु आहार मिले, तो हमारे देश में जो मुसीबत है, उस मुसीबत में से देश को हम बाहर निकाल सके, मुमुसीबत क्या है। दुनिया में सबसे अधिक पशु हमारे पास है, पर प्रति पशु जो दूध का उत्पादन है वह दुनिया में बहुत कम है, ऐसे देश में हमारा नाम है। पशुओं की संख्या कम हो फिर भी दूध का उत्पादन ज़्यादा हो तो ही पशुपालक को पड़ेगा तो ही किसान को पड़ेगा। और इसलिए पशु की देखभाल, पशु के लिए आहार वह अत्यंत महत्वपूर्ण बात है। कुछ समय पहले मैं भरूच आया था। गुजरात स्टेट फर्टिलाइज़र कोर्पोरेशन में एक प्लान्ट का उद्घाटन किया था। उस में से जो चीजें उत्पादित होती है, वह पशु आहार बनाने के काम आता है। और आज भावनगर की धरती पर आकर सर्वोत्तम डेरी द्वारा 65 करोड़ के खर्च से पशु आहार के लीये जिस प्लान्ट का लोकार्पण हो रहा है, मैं भावनगर ज़िले के पशुओं को शुभकामनाएं देता हूं, उनको यह उत्तम आहार मिलेगा। उसके कारण उनकी रोग प्रतिकारक शक्ति बढ़ेगी, दूध का

उत्पादन बढ़ेगा और किसानों के घर में भी अच्छी ज़िंदगी जिने का अवसर आयेगा। भाई महेन्द्र और उनके सारे मित्रों को, डेरी के सारे डाइरेक्टरों को डेरी की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए बहुत अभिनंदन देता हूँ, बहुत शुभकामनाएं देता हूँ।

मेरे प्यारे भाईयो बहनों, एक विवाद का विषय है। क्या? मनुष्य जात ने सबसे पहले तैरना सीखा था कि पहिया बनाना सीखा था। कोई तय नहीं कर पाता था कि पहले पहिया बना कि पहले इंसान तैरना सीखा। लेकिन ये सही है कि मानव जात सदियों से तैर कर नांव से नदी पार करना उसने हमेशा सरल माना, आसान माना। गुजरात के हजारों साल का सामुद्रिक यात्रा का इतिहास रहा है। नांव बनती यहां थी। नाव लेकर दुनिया में जाकर लोगों की परंपरा थी। लोथल 84 देशों के झंडे यहां पर फहरते थे। फलफी यूनिवर्सिटी 1700 साल पहले अनेक देशों के बच्चे हमारे यहां फलफी यूनिवर्सिटी में पढ़ते थे। लेकिन पता नहीं क्या हुआ सब कुछ इतिहास की तरह नीचे जमीन में दब गया। वो भी तो एक जमाना था। लंका की लाडी और घोघा का वर। क्या समृद्धि होगी घोघा की। आम तौर पर लंका की लाडी और घोघा का वर ऐसा कहा जाता था।

भाईयो बहनों, आज का ये programme, आज का ये प्रारंभ घोघा, भावनगर, गुजरात के समुद्र तक के वो पुराने भव्य दिवसों को वापिस लाने का अवसर है। घोघा-दहेज के बीच से फेरी सर्विस सवा सौ दक्षिण गुजरात के करोड़ों लोगों की ज़िंदगी को न सिर्फ आसान बनाएगी बल्कि उन्हें और निकट ले आएगी। जिस सफर में 7-8 घंटे लगते थे। वो सफर एक सवा घंटे में पूरा किया जा सकेगा। हमारे यहां कहा जाता है सबसे मुल्यवान चीज समय होता है। time is money ये कहा जाता है। आज दुनिया में कोई 24 घंटे के, 25 घंटे नहीं कर सकता है। लेकिन ये भारत सरकार और गुजरात सरकार है कि आपके 24 घंटों में से एक घंटे की सफर करके, सात घंटे की सौगात दे सकता है। एक study कहती है कि सामान को ले जाने में अगर सड़क के रास्ते डेढ़ रुपये का खर्च होता है, तो उतना ही सामान ले जाने के लिए रेल के जरिये एक रुपया लगता है, लेकिन वही सामान अगर हम जलमार्ग से ले जाएं तो सिर्फ 20-25 पैसे में ले जा सकते हैं। आप सोच सकते हैं कि आपका कितना समय बचने जा रहा है। देश का कितना पेट्रोल डीजल बचने वाला है। वरना लाखों लीटर इंधन तो जब ट्रेफिक जाम हो जाता है, वहीं पर बरबाद हो जाता है।

भाईयो और बहनों, सौराष्ट्र और दक्षिण गुजरात के बीच हर रोज लगभग 12 हजार लोग यात्रा करते हैं। पांच हजार से ज्यादा गाड़ियाँ हर रोज इन दो क्षेत्रों को connect करने के लिए सड़कों पर दौड़ती हैं। जब यही connectivity सड़क के बजाय समुद्र से होगी, तो 307 किलोमीटर की दूरी 31 किलोमीटर में बदल जाएगी। एक फेरी अपने साथ 500 से ज्यादा लोग, 100 के लगभग कारें, 100 के करीब ट्रकें ये अपने साथ लेकर के जा सकती है। साथियों जब ट्रेफिक का बड़ा हिस्सा इस फेरी सर्विस पर निर्भर हो जाएगा। या जब अपनी-अपनी गाड़ियाँ इधर से उधर ले जाएंगे। तो इसका प्रभाव दिल्ली और मुंबई को connect करने वाले रास्तों पर भी पड़ने वाला है। गुजरात के सबसे ज्यादा औद्योगिकरण वाले क्षेत्र जैसे दहेज, बड़ोदरा और उसके आस-पास के मार्गों पर गाड़ियों की संख्या कम होगी, गाड़ियों की रफ्तार बढ़ेगी और तेजी यहां के पूरे economy system को top-gear में ले जाएगी।

साथियों, हम पुरानी approach के साथ नए नतीजे प्राप्त नहीं कर सकते हैं। न ही पुरानी सोच के साथ नए प्रयोग किए जा सकते हैं। Ghogha-Dahej Ro-Ro ferry service इसका भी बहुत बड़ा उदाहरण है।

मैं जब मुख्यमंत्री बना और खोज खबर ली इस पर चर्चा की, तो कई दशकों से होकर रहे थे। लेकिन ये योजना पता नहीं किस कोने में पड़ी थी। अब जब मैं इसमें जाने लगा आगे बढ़ने लगा। मेरे आने के बाद मैं चाहता था तुरंत शुरू हो, आप हैरान हो जाएंगे कि सरकार ने ऐसी structural गलतियों की थी कि कभी Ro-Ro ferry service हो ही नहीं सकता। पुराने जमाने में क्या काम किया था इन्होंने? समस्या ये थी कि जिसे ferry चलानी थी, उसी से आग्रह किया जाता था कि तुम भी टर्मिनल बनाओ। क्या मुझे बताइये, रोड के उपर कोई बस दौड़ाता है, तो बस वाले को हम कहते हैं कि रोड बनाओ, बस वाले को कहते हैं कि बस स्टेशन बनाओ! एयर पोर्ट पर विमान आता है क्या मैं विमान वाले को कहता हूँ कि एयरपोर्ट बनाओ? एयरपोर्ट सरकार बनाती हैं, बस स्टेशन सरकार बनाती हैं, रोड सरकार बनाती हैं। उस पर दौड़ने के लिए private लोग व्यापार के लिए आते हैं। Ro-Ro ferry service में उन्होंने कह दिया एक Jetty बनानी है, उसका पोर्ट बनाना है, आपको करना है तो करो ये समुद्र का किनारा है, ये पानी है आगे बढ़ो। कौन बढ़ेगा भाई? आखिरकर हमने नीतिया बदली, पुरानी सरकारों के इस approach को हमने बदल दिया। हमने तय किया कि ferry service के लिए टर्मिनल बनाने का काम सरकार करेगी। टर्मिनल बन जाने के बाद उसका संचालन और ferry चलाने का काम private agency को दिया जाएगा। यहां के 'रब' समुद्र क्षेत्र में तलहाटी में जमीन मिट्टी भी बड़ी समस्या होती है। इस वजह से ferry को किनारे तक आने में दिक्कत होती है। बदली हुई रणनीति के तहत सरकार ने भी तय किया कि मिट्टी निकालने के लिए पत्थर हटाने के लिए dredging का काम भी, सरकार उसका खर्चा उठाएगी। हमने ये भी व्यवस्था बनाई कि इस सर्विस के बाद private agency को जो लाभ होगा, उसमें सरकार की भी भागीदारी होगी। ये नई रणनीति सफल रही। और इसी का परिणाम है कि Ghogha-Dahej के बीच Ro-Ro ferry service प्रारंभ हो रही है।

2012 में मैं आया था। इसका शिलान्यास मैंने किया था। लेकिन तब समुद्र में कुछ काम करना है। तो हम जरा भारत सरकार पर dependent रहते थे। और भारत सरकार में ऐसे लोग बैठे थे उस समय, जब मैं गुजरात का मुख्यमंत्री था। वापी लेकर के कच्छ के मांडवी तक गुजरात के समुद्री तट पर विकास पर पूरा प्रतिबंध लगा दिया गया। हमारी सारी industries को पर्यावरण के नाम पर ताले लगाने की धमकियां दी गई थी। मैं जानता हूं कितनी कठिनाईयों से हमने गुजरात को आगे बढ़ाने में सफलता पाई थी। लेकिन जब दिल्ली में आप सबने मुझे सेवा करने का मौका दिया एक के बाद एक समस्याएं सुलझती गईं। और आज Ro-Ro ferry service का लोकार्पण करने का प्रथम चरण का और ये project कठिन था। वरुण देव जी हमारी परीक्षा लेते रहे। लेकिन इतिहास गवाह है जब सेतू के निर्माण में किसी तरह की बाधा आई तो समुद्र मंथन में से ही अमृत भी निकल कर आया।

साथियों आज हमें वरुण देव की आर्शीवाद से ये अमृत मिला है। जो जलसेतू मिला है। मैं शीश झुकाकर के ये कामना करता हूं कि वरुण देव का आर्शीवाद हमेशा की तरह गुजरात के लोगों के साथ रहे। और आज जब हम आज ये Ro-Ro ferry service का प्रारंभ कर रहे हैं तब, मैं वीर मोखरा जी दादा को भी नमन करता हूं। और जैसे मेरे मछुवारे भाई बहन वीर मोखरा जी दादा को नरियल कराके करके आगे बढ़ते हैं। मैं भी उनकी परंपरा का आज पालन करूंगा। और वीर मोखरा जी के आर्शीवाद से हमारी यात्रियों की सुरक्षा बनी रहे। भावनगर और सौराष्ट्र, दक्षिण गुजरात के हिस्से की तरह आगे बढ़ जाएं, इतनी प्रगति हो और वीर मोखरा जी के आर्शीवाद हम पर बने रहेंगे, ये मुझे पूरा विश्वास है।

ये project इंजीनियरों और गुजरात सरकार दोनों के लिए ही एक बहुत बड़ी चुनौती था। इसलिए जो भी लोग इस परियोजना से जुड़े हैं, वे सब के सब बधाई के पात्र हैं।

भाईयो और बहनों, गुजरात में देश का सबसे बड़ा sea front उपलब्ध है। 1600 किलोमीटर से भी ज्यादा हमारा समुद्री तट है। सैंकड़ों वर्षों से गुजरात अपनी शक्ति और सामर्थ्य से पुरी दुनिया का ध्यान अपनी ओर खींचता रहा है। लोथल पोर्ट से निकली जानकारी आज भी बड़े-बड़े marine experts को अचंभित करती है। जिस जगह पर हम सभी उपस्थित हैं, वहां पर सैंकड़ों वर्षों से दुनिया के अलग-अलग क्षेत्रों से जहाज आते रहे हैं। इस समुद्र को विरासत समझते हुए, देखते हुए मैं उसी समय से गुजरात में port led development की बात कर रहा हूं। जब आपने मुझे मुख्यमंत्री के पद पर बिठाया। इसी को ध्यान में रखते हुए हमने गुजरात के coastal इलाके में Infrastructure और Development के दूसरे projects पर विशेष ध्यान दिया। हमने Ship-Building इसकी नई policy बनाई, Ship Building Park बनाए। Special Economic Zones में छोटे पोर्ट को बढ़ावा दिया जाए। Ship-breaking के नियमों में भी बढ़े बदलाव किए गए। सरकार ने Specialized Terminals के निर्माण पर भी विशेष जोर लगाया, जैसे दहेज में Solid Cargo, Chemical और LNG Terminal, मुंद्रा में Coal Terminal ऐसे Specialized Terminals से गुजरात के port-sector को एक नई दिशा, नई ऊर्जा और नई चेतना प्राप्त हुई है।

इसके साथ ही सरकार ने Vessel Traffic Management System और Ground Breaking Connectivity Project को भी विशेष रूप से बढ़ावा दिया। सरकार आने वाले दिनों में Maritime University बनाने और लोथल में Maritime Museum बनाने पर भी बहुत विस्तार से काम इन दिनों चल रहा है। इन सारे कार्यों के साथ ही यहां रहने वाले मेरे मछुवारे भाई बंधु और स्थानिय लोगों का विकास हो, इसके लिए सागर-खेड़ विकास कार्यक्रम जैसी योजनाएं भी हम लगातार चला रहे हैं। इसी बात पर भी जोर दिया कि Shipping Industry में स्थानिय युवाओं को प्रशिक्षित करके उन्हें ही रोजगार दिया जाएगा।

हमारे स्थानिक युवाओं को तैयार करके उनको इसमें रोजगार मिले उसके लिए प्रबंध करने का तय किया। उनकी शिक्षा, स्वास्थ्य, पीने के पानी, बिजली के साथ ही हमने Coastal Social Security का भी पूरा infrastructure तैयार किया।

भाईयो और बहनों, अभी हाल ही में जापान के प्रधानमंत्री आए थे। उस समय हमने जापान के साथ Shipping Sector को लेकर के एक महत्वपूर्ण समझौता किया। इस समझौते के तहत जापान सरकार और वहां की एक वित्तीय संस्था JAICA, Alang shipyard में up-gradation के लिए उसके modernization के लिए हमें वित्तीय सहयोग देंगे, हमें धन देंगे। इसके लिए वो तैयार हुए हैं। हमारे यहां अलंग की काफी चर्चा हुई। पर उसके विकास के लीये, वहां के मजदूरों की स्थिती और पर्यावरण के नाम पर हमारे पूरे उद्योग पर तूफान आया था। इन सबसे बहार निकल कर वह दुनिया में आधुनिक से आधुनिक बने उसके लीये जापान के पास करार कर के, वहीं से धन ला कर के पूरे अलंग के, शीप ब्रेकिंग के प्रोजेक्ट को ज्यादा आधुनिक बनाने की दिशा में काम किया।

साथियों, सरकार भावनगर से Alang-Sosiya Ship Recycling Yard तक के लिए एक alternative road भी उस पर भी

काम कर रही है। एशिया के सबसे बड़े Ship Recycling Yard में 15 से 25 हजार कर्मचारी काम करते हैं। Alang-Sosiya Ship Recycling Yard भावनगर से करीब 50 किलोमीटर दूर है। अभी जो route उस पर काफी जाम की कितनी दिक्कत रहती है। मुझे लगता है वो मुझे बताने की जरूरत नहीं है। सरकार ने ये तय किया है Alang-Sosiya Ship Recycling Yard और महुवा, पीपावाओ और जाफराबाद, वैरावल को जोड़ने वाला जो एक वैकल्पिक रूट है उसे चौड़ा किया जाएगा, upgrade किया जाएगा। भविष्य में Alang Yard की क्षमता भी बढ़ने जा रही है और उसे देखते हुए बीच सड़क का आधुनिकीकरण आवश्यक हो गया है। इस रूट से Ghogha-Dahej ferry service के लिए आ रही गाड़ियों को भी फायदा होने वाला है।

साथियों, सरकार के लगातार प्रयास का नतीजा है कि गुजरात के coastal आज इतनी तेजी से विकस हो रहा है। आज गुजरात पूरे देश में छोटे पोर्ट के जरिए होने वाले कुल cargo की आवाजाही का 32 प्रतिशत अकेला गुजरात handle करता है। यानि एक तिहाई गुजरात में होता है। इतना ही नहीं इस काम में पिछले 15 वर्षों में गुना बढ़ोतरी हुई है। मुझे उम्मीद है कि जिस तरह पिछले 15 साल में गुजरात ने अपने ports की क्षमता को भी चार गुना बढ़ाया है, cargo handling की रफ्तार भी और तेज होगी।

भाईयो और बहनों, गुजरात मार्ग की दृष्टि से बहुत ही strategic location पर है। यहां से दुनिया के किसी भी भू-भाग तक समुद्री मार्ग से पहुंचना बहुत ही आसान, सस्ता और सरल रास्ता है। हमें गुजरात की शक्ति का भरपूर फायदा उठाना चाहिए। गुजरात का maritime development भी पूरे देश के लिए एक model है। मुझे उम्मीद है कि Ro-Ro ferry service का पूरा project भी दूसरे राज्यों के लिए भी एक model project की तरह काम करेगा।

हमने जिस तरह बरसों की मेहनत के बाद इस तरह के project में आने वाली दिक्कतों को समझा है, उन्हें दूर किया है। वो दिक्कतें कम से कम इसे दोहराने वालों राज्यों को कभी नहीं आएगी। इस ferry service से पूरे क्षेत्र में सामाजिक, आर्थिक विकास का एक नया दौर शुरू होगा। रोजगार के हजारों नये अवसर बनेंगे। Coastal Shipping और Coastal Tourism का भी नया अध्याय आरंभ होगा। आने वाले दिनों में जब दिल्ली और मुंबई के बीच Dedicated Freight Corridor बन जाएगा और साथ ही दिल्ली-मुंबई Industrial Corridor का काम पूरा हो जाएगा तो इस सर्विस समेत गुजरात से जुड़े समुद्री मार्ग का महात्म्य भी कई गुना बढ़ जाएगा। ये project अहमदाबाद और भावनगर के बीच के इलाकों में औद्योगिक विकास को एक करने के लिए बनाए गये Dholera special investment region (SIR) को भी एक नई मजबूती देने वाला है। Dholera SIR भारत ही नहीं विश्व के नक्शे पर विकसित होने वाला ये सबसे बड़ा औद्योगिक केंद्र होने वाला है। इससे लाखों लोगों के लिए नए रोजगार के अवसर बनेंगे। गुजरात सरकार के प्रयास से Dholera में infrastructure से जुड़े काम तेज गति से आगे बढ़ रहे हैं। कुछ ही वर्षों में Dholera पूरी दुनिया में अपनी धाक जमाएगा और उसमें एक ही भूमि का, Ghogha -Dahej ferry service का भी योगदान होगा।

साथियों, भविष्य में हम इस ferry service को ये सिर्फ Ghogha-Dahej तक रूकने वाला नहीं है। भविष्य में हम इस ferry service को हम हजीरा, पीपावाओ, जाफराबाद, दमन-दवीप इन सभी जगह पर जोड़ने की दिशा में आगे बढ़ने वाले हैं मुझे बताया गया है। कि सरकार की तैयारी आने वाले वर्षों में इस ferry service को सूरत से आगे हजीरा और फिर मुंबई तक ले जाने के लिए भी चल रही है। कच्छ की खाड़ी में भी इसी तरह का project शुरू किए जाने की चर्चा अभी प्राथमिक स्तर पर चल रही है। मुझे बताया गया है। कि कच्छ के वायु और जामनगर के rozi बंदर के बीच ऐसी सेवा शुरू करने के लिए pre-feasibility report already तैयार हो चुकी है। इतना ही नहीं जब ferry service का इस्तेमाल बढ़ेगा तो तमाम उद्योगों को नर्मदा नदी के माध्यम से भी connect किया जा सकता है।

साथियों, भारत की विशाल समुद्री सीमा 7500 किलोमीटर लंबी है। निवेश की बड़ी संभावनाओं से भरी हुई है। मेरा मानना रहा है कि हमारे समुद्री तट देश की प्रगति के gateway हैं। भारत की समृद्धि के प्रवेश द्वार हमारे बंदर होते हैं। लेकिन बीते दशकों में केंद्रीय स्तर से इन पर कम ही ध्यान दिया गया। देश का shipping और port sector भी लंबे समय तक उपेक्षित रहा। इस sector को सुधारने के लिए उसे आधुनिक बनाने के लिए सरकार ने सागरमाला कार्यक्रम भी शुरू किया है। हमारे यहां कच्छ-सौराष्ट्र हमेशा खाली ही होता जाता है, लोग चले जाते थे। कारण क्या तो पीने का पानी नहीं और समंदर की नमक से भरी हुई हवा, खेती नहीं हो पाती थी, रोजी-रोटी नहीं मिलती, लोग छोड़ते जाते थे। भूतकाल में समंदर की ताकत को समझा होता, पानी का सामर्थ्य को समझा होता तो कच्छ-सौराष्ट्र के लोगों को बड़े-बड़े शहरों में जाकर झोंपड़ियों में ज़िंदगी जीने के लिए मजबूर नहीं होना पड़ता। भाईयो-बहनों हमने जो कदम उठाया है, पूरे कच्छ-सौराष्ट्र का समुद्री किनारे को फिर से शुरू करने का पूरे गुजरात में आनेवाले दिनों में एसी धमधमाट कहीं देखने को मिलने वाली है तो सबसे ज्यादा इन कच्छ-सौराष्ट्र के समंदर किनारे देखने को मिलेगी। हमने ऐसे बीज बोये हैं ।

सागरमाला परियोजना के तहत देश में मौजूदा ports उसका modernization और नये पोर्ट के development का काम

किया जा रहा है। सड़क रेलमार्ग Interstate-Waterways और Coastal Transport को integrated किया जा रहा है। ये परियोजना Coastal Transport के जरिये माल ढुलाई को बढ़ाने में बहुत अहम भूमिका निभा रही है।

साथियों, सरकार के प्रयासों का ये नतीजा है कि पिछले तीन वर्षों में Port Sector में बहुत बड़ा परिवर्तन आया है। और अभी तक का सबसे ज्यादा capacity addition पिछले दो या तीन वर्ष में हुआ है। जो port और सरकारी कंपनियां घाटे में चल रही थी, उनमें भी परिस्थिति बदल रही है। सरकार का ध्यान coastal service से जुड़ी skill development पर भी है। एक अनुमान के मुताबिक अकेले सागरमाला project से आने वाले समय में एक करोड़ जितनी नई नौकरियों के हिन्दुस्तान में अवसर पैदा हो सकते हैं। हम इस approach के साथ काम कर रहे हैं कि transportation का पूरा framework आधुनिक और integrated हो।

हमारे देश में transport नीतियों में जो असंतुलन था, उसे भी दूर किया जा रहा है। ये असंतुलन इतना ज्यादा था वो आप इसी से समझ सकते हैं कि आजादी के इतने वर्षों बाद भी हमारे यहां सिर्फ पांच National Waterways थे। water transport में इतना सस्ता होना और देश की नदियों का जल होने का बावजूद इसे नजरअंदाज कर दिया गया। अब इस सरकार ने 106 National Waterways का गठन किया गया है। और इस पर तेजी से काम चल रहा है। इस National Waterways की कुल लंबाई 17000 किलोमीटर से भी ज्यादा है। ये Waterways देश के transport sector देश के असंतुलन को दूर करने में बहुत मददगार साबित हुई है।

हमारी सामुद्रिक संपदा हमारे ग्रामीण और समुद्री तट को एक नया आयाम दे सकती है। मछुआरे भाई इस संपदा का पूरा इस्तेमाल कर पाएं इसके लिए सरकार ने Blue Revolution Scheme को शुरू किया है। उन्हें आधुनिक तकनीक का इस्तेमाल करते हुए मछली पकड़ने और मछली पालन में value-addition के बारे में सिखाया जा रहा है।

हमारे मछुआरे भाईयों के लिये ब्ल्यू रिवोल्यूशन स्कीम उनको लंबी बोट मिले , आधुनिक बोट मिले, दूर तक 12 नोटिकल माईल से भी अंदर जाये, ज्यादा से ज्यादा उनको मछली मिले और पूरी व्यवस्था अंदर हो, हमारे मछुआरे कम मेहनत में ज्यादा कमायें इसके लिए सरकार ने Blue Revolution Scheme के अंतर्गत आज मछुआरों को Longliner trollers के लिए आर्थिक मदद देने की भी योजना बनाई है। एक vessel पर केंद्र सरकार की तरफ से चालीस लाख रुपये की सब्सिडी दी जाएगी। Longliner trollers का ने सिर्फ मछुआरों की जिंदगी आसान बनाएंगे बल्कि वो उनके कारोबार को भी नई आर्थिक मजबूती देंगे। अभी जिस तरह ये trollers का इस्तेमाल किया जाता है, वो कम पानी में मछली पकड़ने के काम आते हैं। तकनीक के मामले में भी ये बहुत पुराने हैं risky हैं। इसलिए जब इन पुराने trollers को लेकर के वे समुद्र जाते हैं तो अक्सर रास्ता भटक जाते हैं। उन्हें पता तक नहीं चलता कि भारत की समुद्री सीमा छोड़कर, दूसरे देश की समुद्र सीमा में पहुंच गये। इसके बाद मछुआरों को कई तरह की दिक्कत उठानी पड़ती है। तकनीक का ज्यादा से ज्यादा इस्तेमाल करके हम इन दिक्कतों को कम कर सकते हैं और इसलिए हमने ये Longliner trollers की मदद से मछुआरे भाई समुद्र में सही दिशा में दूर तक गहरे पानी में मछली पकड़ने के लिए जा सके इसके सरकार मदद करने की योजना बनाई है। आधुनिक Longliner trollers ईंधन के मामले में भी काफी किफायती होते हैं। यानि मछुआरों की सुरक्षा बढ़ाने के साथ-साथ उनका व्यापार और मुनाफा दोनों बढ़ाएंगे।

साथियों देश में infrastructure का विकास हमारी सबसे बड़ी प्राथमिकताओं में से एक है। पिछले तीन वर्षों में Highways, Railways, Waterways और Airways पर जितना निवेश किया गया है। उतना पहले इतने कम समय में कभी नहीं हुआ। इसके अलावा नई Aviation Policy बनाकर Regional Air Service को सुधारा जा रहा है। छोटे-छोटे हवाई अड्डों का आधुनिकीकरण किया जा रहा है। कुछ हफ्ते पहले ही अहमदाबाद से मुंबई के बीच चलने वाली देश की पहली बुलेट ट्रेन का भी काम शुरू किया जा चुका है। ये सारे प्रयास देश को इक्सवीं सदी के transport system देने का आधार बनेंगे। एक ऐसा transport system जो New India की आवश्यकता हो New India की उम्मीदों के मुताबिक। साथियों आज यहां Ghogha से मैं ferry के माध्यम से ही दहेज तक जाऊंगा। मेरे साथ मेरे कुछ नन्हें साथी, दिव्यांग बच्चे भी होंगे। उनके चेहरे की खुशी ही मेरा पारिश्रमिक होगा। मुझे गुजरात सरकार ने पूछा कि यह फेरी मैं कौन आयेगा? मैंने कहा मेरे 100 स्पेशियल मेहमान हैं और आपको ले जाने पड़ेंगे। उनको लगा कि यह मैं सब दिल्ली से लाऊंगा। मैंने उनको कहा कि जो मेरे दिव्यांग भाई-बहन हैं, परमात्मा ने जिन बच्चों को कोई मुश्किलें दी हैं वह मेरे आज स्पेशियल गेस्ट हैं और उनको आज मैं अपने साथ इस फेरी सर्विस के उद्घाटन में अपने साथ लेकर जाऊंगा, दहेज ले जाऊंगा और वापस यह फेरी उनको छोड़ जायेगी। भावनगर के बच्चों, दिव्यांगजनों उनको मेरे साथ ले जाना वह मेरे लिए एक गर्व का विषय है।

भाईयो-बहनों, से बचपन से जिस कार्य का सपना देखा था, वो पूरा होने के बाद मैंने ऐसा अनुभव किया इसकी कल्पना शायद कोई नहीं कर सकता है। बचपन में जिस बात को सुना था और हो नहीं रहा था, आज जब अपनी आंखों के सामने देख पर रहा हूं और खुद को उस काम को करने का मौका मिला, मैं समझता हूं कि मेरे जीवन का बहुत धन्य पल है। मैं

इसे अपना सौभाग्य मानता हूं। दहेज में जाऊंगा अपने अनुभव वहां बाटूंगा। लेकिन मैं आज आपसे आग्रह करूंगा कि इस महत्वपूर्ण काम में आप हमारे साथ जुड़िए और ये मानिए ये ferry service तो शुरूआत है, ये पहला चरण है। बाद में प्राइवेट कंपनियां आएंगी ढेर सारी फेरियां चलेंगी। रूट चलेंगे, tourism development होगा। और सूरत के हमारे धनी लोग इसको हम hire करके जन्म दिन मनाने के लिए भी समुद्र में जाएंगे। बहुत बड़ी विकास की संभावनाएं हैं। और इसलिए मैंने कहा कि घोघा का भाग्य फिर एक बार बदलने वाला है। घोघा का भाग्य फिर एक बार बदल रहा है। और एक बार फिर आप सभी को Ghogha-Dahej Ro-Ro ferry service और सर्वोत्तम डेयरी के cattle feed plant के लिए मैं बहुत-बहुत बधाई देता हूं। आप सबको बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूं। और फिर एकबार आप सबको नूतन वर्षाभिन्नंदन और खूब प्रगति करो, विकास की नई उंचाईयों को प्राप्त करो ऐसी शुभकामनाएं। आप सबको धन्यवाद |

भारत माता की जय,
भारत माता की जय,
जय वीर मोखरा जी दादा
जय वीर मोखरा जी दादा
जय वीर मोखरा जी दादा

अतुल तिवारी, अमित कुमार, ममता

पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय

07-अक्टूबर-2017 20:04 IST

राजकोट, गुजरात में ग्रीनफील्ड हवाई अड्डे की आधारशिला रखे जाने के समारोह में प्रधानमंत्री के भाषण का मूलपाठ

विशाल संख्या में पधारे हुए सुरेन्द्रनगर जिले के मेरे प्यारे भाईयो और बहनों।

यह चोटिला ने कभी सोचा होगा की यहां एयरपोर्ट आयेगा? सुरेन्द्र जिले ने कभी सोचा था? एयरपोर्ट आयेगा तो अच्छा लगेगा ना? एयरपोर्ट आना चाहिये ना? यह एयरपोर्ट आये, विमान उड़े, सारी व्यवस्था हो, उसको विकास कहेंगे? यह विकास आपको पसंद है? विकास होना चाहिये? विकास जरूरी है? विकास गुजरात का भविष्य बदलेगा? विकास आपके संतानो का भविष्य बदलेगा? शाबाश।

आप गरीब से गरीब व्यक्ति को पूछो, जिस के पास घर नहीं है उससे पूछो, घर चाहिए वो कहेगा हां चाहिए। और उसको घर देना है, गरीब को रहने के लिए व्यवस्था देनी है तो विकास किए बिना ये संभव नहीं है। विकास पहले भी होता था लेकिन तब किसी गांव में किसी मोहल्ले में एक हैंडपंप लगा दिया तो नेता तीन-तीन चुनावो में कहता रहता था कि देखिए मैंने आपके यहां हैंडपंप लगा दिया है। मुझे चुनाव जीता दीजिए मैंने आपका विकास का काम किया है। यानि हैंडपंप लगाना, पानी के लिए हैंडपंप लगाना यही विकास की परिभाषा थी।

आज एक ऐसी सरकार है। जो इतनी बड़ी पाइप लाइन लगाकर के मां नर्मदा का पानी गांव-गांव, घर-घर पहुंचा रही है। और पूरे गुजरात में नर्मदा योजना के कारण सबसे अधिक लाभ अगर किसी को होने वाला है। उस जिले का नाम है। क्या नाम है उस जिले का? क्या नाम है? उस जिले का नाम है सुरेंद्र नगर। नर्मदा का पानी ये सूखी धरती को नंदनवन बनाने के लिए मां नर्मदा आपके घर तक आई है। और सिर्फ ग्रामीण और कृषि जीवन में ही ये नर्मदा का प्रभाव पैदा होगा ऐसा नहीं है। ये पानी एक ऐसी ताकत है कि सुरेंद्र नगर जिला नर्मदा के पानी के कारण आने वाले दिनों में औद्योगिक विकास का भी एक बहुत बड़ा का केंद्र बनेगा। रोजगार की सर्वाधिक संभावनाएं सुरेंद्र नगर जिले में पैदा होंगी। शिक्षा का ये बहुत बड़ा धाम बनेगा। क्योंकि जब पानी होता है तो व्यवस्थाएं विकसित करने की सरकार की हिम्मत और बढ़ जाती है। और ये airport बन रहा है उसका नतीजा भी यही है। कि सुरेंद्र नगर जिला और राजकोट जिला ये एक-दूसरे से आने वाले दिनों में स्पर्धा करने वाले थान आगे निकल जाये या मोरबी आगे निकल जाये। और यह तंदुरस्त स्पर्धा होने वाली है, विकास की तंदुरस्त स्पर्धा होने वाली है। और इसलिए जो तेज गति से आगे बढ़ने की संभावना वाले सुरेंद्र नगर जिला और राजकोट जिला उसके मध्य में भारत सरकार सैंकड़ों करोड़ों रूपए खर्च करके ये भव्य airport बनाने की दिशा में आज महत्वपूर्ण शिलान्यास करके कदम रख रही है। कुछ लोग होते हैं जिनको इसमें भी बुरा लगेगा। लेकिन उनको कहो बस मैं जाओ यहां विमान में क्यों जाते हो। नहीं नहीं बोले जल्दी जाना है। तो तुझे तो जाना है लोगों को नहीं जल्दी जाना है क्या?

सामान्य मानवी को और आज हवाई यात्रा वो पुराने जमाने में राजा महाराजा जो हुआ करते थे न, वो नहीं रहा। और इसलिए मैंने कहा मैं देश के aviation sector का विकास ऐसा करना चाहता हूं। कि हवाई चप्पल पहना हुआ व्यक्ति भी हवाई जहाज में यात्रा करने लगेगा और उसी के तहत आप हैरान होंगे। आज पूरे विश्व में aviation sector का महात्म्य है। लेकिन भारत में आजादी के बाद कभी aviation की policy ही नहीं बनी। कभी ऐसा सोचा है क्या आपने। हिन्दुस्तान सरकार हिन्दुस्तान के पास aviation की policy ही नहीं है। हमने आकर के aviation की policy बनाई और बड़े-बड़े अहमदाबाद, मुंबई, चेन्नई यहां सीमित नहीं छोटे-छोटे स्थान पर हवाई यात्रा उपलब्ध कैसे हो उसका बीड़ा उठाया है। जहां दूर-दूर connectivity नहीं है। वहां एक घंटे से ज्यादा सफर हो, एक घंटे तक की सफर हो ढाई हजार की टिकट फिक्स करके aviation को बल दिया है अब तब आठ रूट काम करने लग गए हैं। गुजरात में भी कंडला का लाभ मिल रहा है। मीठापुर को लाभ मिल रहा है। छोटे-छोटे स्थानों को और इसके कारण भविष्य में आज हिन्दुस्तान में राज्य ऐसे हैं कि दो या तीन एयर पोर्ट, हवाई पट्टिया पड़ी हुई हैं। एक स्थिति ऐसी आएगी एक-एक राज्य में दस-दस, पंद्रह-पंद्रह, बीस-बीस हवाई अड्डे काम करते होंगे। और जिस प्रकार से देश में इन दिनों आप जानकर के खुश होंगे अभी ताजा मैंने खबर ली 14 प्रतिशत हवाई यात्रियों की संख्या में वृद्धि हुई है 14 प्रतिशत। और इसलिए राजकोट के अंदर ये जो ग्रीनफील्ड प्रोजेक्ट हो रहा है।

मैं गुजरात को इस क्षेत्र के नागरिकों को बधाई देता हूं। और मुझे खुशी है कि इतना बड़ा हवाई अड्डे का प्रोजेक्ट सिर्फ 4 प्रतिशत जमीन किसानों से लेनी पड़ी। 4 प्रतिशत, 96 प्रतिशत जमीन जो बंजर थी, वीरान थी। उस जमीन पर एयर पोर्ट

बनाने का निर्णय हुआ है। ताकि अब सुरेंद्र नगर की जमीन कृषि के लिए महत्वपूर्ण है और इसलिए बंजर भूमि को पसंद किया है। और उसको हमने एयर पोर्ट के लिए आगे लाए हैं। अभी विजय भाई वर्णन कर रहे थे राजकोट के एयर पोर्ट का उसकी इतनी सीमाएं हैं। बस स्टेशन से भी उसकी सीमा ज्यादा दिखती है आजकल। और इसलिए राजकोट और ये पूरा क्षेत्र जब विकसित हो रहा है। तो यहां पर भविष्य को ध्यान में रखते हुए और वो दिन भी दूर नहीं होगा। जब यहां से international service भी शुरू होगी। दुनिया के किसी भी कोने में जाना हो तो ये राजकोट चोटीला के बीच का ये हवाई अड्डा काम आने वाला है। ये बहुत महत्वपूर्ण काम आज हो रहा है।

आज सुरेन्द्रनगर और वढवाण, उनके भी दो महत्व के कार्यक्रम हम कर रहे हैं। सूर-सागर वह भविष्य में आपका सुख सागर ही बनने वाला है। पानी के कारण पशुपालन बढ़ने वाला है। पशु की दूध उत्पादकता भी बढ़नेवाली है। यह हमारी सूर-सागर डेरी, पांच-सात साल पहले, भूतकाल की सरकार ने एक ऐसा कानून बनाया था, कि डेरियां न बनें। मुझे आश्चर्य होता है कि ऐसा क्यों किया होगा ! जब मैं मुख्यमंत्री था तब मैंने तय किया कि जो लोग डेरी बनाने के लिये आगे आयेंगे, उनको राज्य सरकार की तिजोरी से मदद मिलेगी, और आज सौराष्ट्र के लगभग हर एक ज़िले में, डेरी का काम पूरे जोश के साथ आगे बढ़ा। पशुपालकों को इससे ज्यादा कोई मदद नहीं हो सकती। दूध के पूर्ण भाव मिले, और आज उसके आधुनिकीकरण के एक प्लान्ट का भी मुझे लोकार्पण करने का अवसर मिला है। यह सूर-सागर, मां नर्मदा के आने के बाद, दूध के उत्पादन में इतना इज़ाफा होने वाला है कि, सही अर्थ में यह सुरेन्द्रनगर ज़िले की सुख सागर बन गई है और यह सुख सागर फलेफूले, ऐसी मेरी शुभकामनाएं दे रहा हूं।

धोरीधजा का डेम, मुझे बराबर याद है, जिस दिन धोरीधजा डेम में नर्मदा के पानी का स्वागत के लिए मैं आया था, पूरा जिला खुश था। पानी की तड़प किसे कहते हैं, उसका पता प्यासे को चलता है, यह कच्छ- सौराष्ट्र, गुजरात के लोगों को पता चलता है की पानी आये तो उसका मतलब क्या होता है। ऐसा वातावरण था, और वढवाण में तो पहले 15-20 दिन में एक दिन पानी आता था। मेहमान आनेवाले हों तो कहना पड़ता था की दोपहर में आना, रात को रुकने के लिये मत आना क्योंकि सुबह में नहाने के लिये पानी नहीं दे पायेंगे। ऐसे दिन गुज़ारे थे यह विस्तार ने। और आज वढवाण नगर के अंदर लोगों को ज्यादा पानी मिले, सुविधाजनक पानी मिले, ऐसी 300-350 किलोमीटर की पाइपों की जाल बिछाई गई है। पानी की नवनिर्मित टंकी, इन सब के कारण पीने के पानी की सुविधा और मैं मानता हूं कि यह विस्तार की बहनें, जितने आशिर्वाद दें वह कम है। बहनों को जो कष्ट में से मुक्ति मिली है, यह बहनें जितने आशिर्वाद दें, वह कम है। आज मोरबी के साथ रोड का नवीनीकरण, अहमदाबाद से राजकोट तक रोड की चौड़ाई बढ़ाने का काम, यह बात आज की पीढ़ी को जल्दी समझ में नहीं आयेगी। पर भाजपा की सरकार आने से पहले, आप के पास समय हो, और पुराने अखबार मिले तो ज़रा देखना। हफ्ते के चार दिन ऐसे थे कि अहमदाबाद-राजकोट हाईवे पर अकस्मात होते थे। अनेक मां खुद के युवा बच्चे गवां देती थी। परिवार के परिवार उजड़ जाते थे। साल में 100 से ज्यादा बड़े अकस्मात होते थे। जिसका कारण रोड बहुत छोटा था। और मुझे बराबर याद है, उस समय मैं राजकारण में नहीं था। लिंबडी- बगोदरा से फोन आता था, और उस समय तो मोबाइल फोन नहीं थे, पुराने फोन थे। की बड़ा अकस्मात हुआ है और मैं अहमदाबाद से हमारे अशोकभाई और उनको दौड़ाता था। लगभग हफ्ते में दो-चार बार ऐसा करना ही पड़ता था। आप राजकोट के लोगों को पूछो, अनेक परिवार होंगे, कि अकस्मात में उन्होंने किसी को गंवाया होगा। सुरेन्द्रनगर के लोगों को पूछो, अनेक लोगों ने गवाये होंगे।

जब भाजपा की सरकार बनी 1995 में पहलीबार, केशुभाई मुख्यमंत्री थे और पहला काम तय हुआ की यह रोड की फिक्र करें और यह निर्दोष लोग जो मर रहे हैं, उनको बचायें और वह काम भाजपा की सरकार ने किया और उसका परिणाम है कि अकस्मातों की संख्या कम हुई। अब आज ट्रैफिक और बढ़ा है। भारत सरकार ने तय किया कि इसको 6 लेन बनाकर, आधुनिक स्थिति पर ले आये, क्योंकि विकास के लिये रोड-रास्ता अनिवार्य होते हैं। गति प्रगति के लिये ज़रूरी होती है। और गति ज़रूरी होती है तो गति की पूर्ति के लिये ज़रूरी चाहे हवाई जहाज़ की व्यवस्था करनी हो, चाहे रोड चौड़े करने हो, एकसाथ इन कामों को ध्यान देना चाहिये। चाहे मोरबी की ओर का रास्ता, मोरबी का रास्ता चौड़ा होने का मतलब, औद्योगिक गतिविधि को बल देना। कच्छ तक पूरा औद्योगिक पट्टे का निर्माण हुआ है। उसमें यह स्ट्रक्चर सुविधा करनेवाला है।

और इसीलिये आज जब इस धरती पर, पंचाल पंथक में एकसाथ पांच योजनाओं के शिलान्यास का, लोकार्पण का मुझे अवसर मिला है। और अब तो थोड़े दिन में गुजरात सरकार ने यह पंचाल पंथक को धार्मिक यात्रा के लिये भी उसका एक महत्व बनाकर खड़ा किया है। और उसके कारण चोटीला के मां चामुंडा, त्रिनेश्वर तरणेतार, सुंदरीभवानी, सूरजदेवल, बांदियावेली, जरियामहादेव, गेबीनाथ, अवालियाठाकर, यह सब हमारे पंचाल पंथक के तीर्थधाम हैं, उनको एक-दूसरे के साथ जोड़कर यात्राधाम का बहुत बड़ा विकास का काम भी गुजरात सरकार ने शुरू किया है। इस तरणेतार के मेले में विदेशी आये ऐसा हम सोच रहे थे, पर अब जब चोटीला में एयपोर्ट बनेगा, तो आपका तरणेतार के मेले को भी अंतर्राष्ट्रीय मेला बनने में देर नहीं लगेगी। एक प्रकार से विकास अर्थव्यवस्था के साथ सीधा जुड़ा हुआ हो, आर्थिक उन्नति का कारण बननेवाला हो, आर्थिक गतिविधि को तेज़ गति देनेवाला हो, ऐसे स्पष्ट दृष्टिकोण के साथ आज भारत सरकार हिन्दुस्तान के अनेक कोने में विकास की इस यात्रा को बल दे रही है। मैं गुजरात सरकार को भी अभिनंदन देता हूँ, उन्होंने भी इस विकास की यात्रा को उत्तरोत्तर गति दी है, नये आयाम दिये हैं, विकसित गुजरात, आधुनिक गुजरात, समृद्ध गुजरात, उसके संकल्प के साथ आज हम आगे बढ़ रहे हैं।

2022, आज़ादी के 75 साल हो रहे हैं। पांच साल का समय है। इस पांच साल में हर एक नागरिक तय करें कि हमें देश को क्या देना है। कोई और कुछ करें, सरकार यह करे, नगरपालिका करे ऐसा नहीं, मैं यह करूंगा। मेरे देश के लिये पांच साल में मैं यह ज़रूर करूंगा। ऐसा संकल्प प्रत्येक नागरिक को करना चाहिये। सुरेन्द्रनगर ज़िले को मैं विनती करता हूँ कि जब मबलख फसल की संभावना पैदा हुई, मां नर्मदा हमारे घर पधारे है तब सुरेन्द्रनगर ज़िले में एक भी खेत ऐसा न हो, की जहां टपक सिंचाई न हो। और टपक सिंचाई द्वारा माईक्रो ईरिगेशन, स्प्रिंकलर द्वारा, इस खेती को हम आधुनिक बनायें। अगर सुरेन्द्रनगर ज़िले का किसान इस टपक सिंचाई से खेती करना शुरू कर दें, तो आप कल्पना भी नहीं करेंगे ऐसी एक बड़ी क्रांति हम ला सकेंगे। और मां नर्मदा का पानी ज़्यादा अच्छी तरह से इस्तेमाल करने में हमें उपयोगी होगा और इसीलिये, गुजरात के लिये पानी हरहंमेश एक प्राणप्रश्न रहा है और अब जब पानी आया है तब, वह प्राण से भी प्यारा होना चाहिये, उसका ज़रा भी व्यय न करें, ज़रा भी उसको बिन उपयोगी, नष्ट न होने देना चाहिये, वह ज़िम्मेदारी समय गुजरात के नागरिक की है।

2022 तक आज़ादी के 75 साल मनायेंगे तब, हम हमारी तरफ से एक एक संकल्प करें, और 2022 में हिन्दुस्तान के किसानों की आय जो दुगुनी करनी है उसके अंदर यह टपक सिंचाई, माईक्रोईरिगेशन, वैज्ञानिकता, टेक्नोलॉजी, वह बहुत बड़ी भूमिका अदा करनेवाला है और उस दिशा में हम आगे बढ़ें।

मैं फिर से एकबार इतनी विशाल संख्या में, चोटीला से भी इतना दूर जहां मेरी नजर पहुंचती है, लोग ही लोग मुझे दिखते हैं। आपने जो यह अद्भुत प्रेम बरसाया, इतनी गरमी में बड़ी संख्या में आप उपस्थित रहें, आपने आशीर्वाद दिये, मैं आपका हृदयपूर्वक आभार व्यक्त करता हूँ।

भारत माता की जय...

दो मुठ्ठी बंध करके पूरी ताकत के साथ बोलो...

भारत माता की जय...

भारत माता की जय...

भारत माता की जय...

अतुल तिवारी, शाहबाज़ हसीबी, ममता

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

25-दिसंबर-2017 19:15 IST

नोएडा और दिल्ली के बीच नए मेट्रो मार्ग के उद्घाटन के अवसर पर प्रधानमंत्री के भाषण का मूल पाठ

मेरे प्यारे भाइयों और बहनों।

आज पूरा विश्व क्रिसमस का पर्व मना रहा है। भगवान यीशु का प्रेम और करुणा का संदेश मानव जात के कल्याण का एक उत्तम से उत्तम मार्ग है। विश्व भर में क्रिसमस के इस पावन पर्व पर बहुत-बहुत शुभकामनाएं। आज दो भारत रत्न उनका भी जन्मदिन है। एक भारत रत्न महामना मदन मोहन मालवीय जी और दूसरे भारत रत्न श्रीमान अटल बिहारी वाजपेयी जी।

अभी हमारे मुख्यमंत्री जी कह रहे थे कि कोई प्रधानमंत्री जब किसी राज्य में जाता है तो उस राज्य को आनंद होता है, अच्छा लगता है लेकिन मैं तो किसी राज्य में नहीं गया हूं, मैं तो मेरे अपने राज्य में आया हूं। उत्तर प्रदेश ने ही मुझे गोद लेकर के मेरा लालन-पालन किया है, मेरी शिक्षा-दीक्षा की है और मुझे नई जिम्मेदारियों के लिए ढाला है। यही उत्तर प्रदेश है, बनारसवासियों ने मुझे सांसद बनाया, पहली बार सांसद बना और यही उत्तर प्रदेश के 22 करोड़ लोग हैं जिन्होंने देश को स्थिर सरकार देने में बहुत बड़ी भूमिका निभाई है और मुझे प्रधानमंत्री के तौर पर आपकी सेवा करने का सौभाग्य मिला है।

भाइयों बहनों आज Botanical Garden से मुझे Metro में यात्रा करने का सौभाग्य मिला और आज का युग ऐसा है कि बिना connectivity जिंदगी ठहर जाती है। बिना संपर्क बिखरा-बिखरा सा माहौल हो जाता है। ये Metro, ये सिर्फ आज के युग में चलो Metro आ गई, अच्छा हुआ। इतना सीमित अर्थ नहीं है। करोड़ों रुपयों की लागत लगती है। बहुत बारीकी से इसको लागू करना होता है लेकिन एक प्रकार से आने वाले सौ साल तक आने वाली पीढ़ी दर पीढ़ी तक इसका सामान्य मानवी को लाभ मिलने वाला है। ये व्यवस्थाएं दूरगामी होती हैं। एक नोएडा वासी के रूप में, एक उत्तर प्रदेश के नागरिक के रूप में, इस देश के नागरिक के रूप में ये व्यवस्थाएं सच्चे अर्थ में सर्वजन-हिताय सर्वजन-सुखाए होती हैं।

कभी-कभी हमारे देश में कोई भी विषय ऐसा नहीं होता है जिस पर राजनीति का रंग न लगाया जाए और इसलिए कभी-कभी विकास के उत्तम काम भी हमेशा जनहित के तराजू से तोलने के बजाय राजनीतिक दलों के हितों के तराजू से तोले जाते हैं। आज भी हम देश में बहुत बड़ी मात्रा में पेट्रोलियम पैदावरों को Import करते हैं। देश का बहुत सारा धन इस पर खप रहा है। हमारी कोशिश है कि 2022, जब भारत की आजादी के 75 साल हों तो विदेशों से जो हम पेट्रोलियम product Import करते हैं दूसरी तरफ हमारे देश की जो requirement बढ़ती चली जा रही है। 2022 में ये requirement और बढ़ने वाली है। हम कुछ ऐसे कदम उठाना चाहते हैं। कि इस बढ़ती हुई requirement के बावजूद भी आज हम जितना Import करते हैं उसमें कुछ percent हम कमी कर सकते हैं क्या? देश का धन देश में बचा सकते हैं क्या? और इसलिए Mass Transportation, Rapid Transportation, Multi Model Transportation ये समय की मांग है। आज शायद धन खर्च करने में दिक्कत आती है, प्राथमिकताओं को थोड़ा बदलना पड़ता है। लेकिन इसके कारण आने वाले समय में इसका बहुत लाभ होने वाला है इस Metro के साथ Solar Energy को भी जोड़ा गया है। करीब-करीब दो मेगावाट बिजली Solar Energy से उत्पादन होगी, सूर्य शक्ति से उत्पादन होगी। जो इस Metro के खर्च को कम करने में काम आएगी। इस Metro के कारण जो Private Vehicle में जाते हैं वो स्वाभाविक रूप से Metro पसंद करेंगे और उनकी तरफ से भी जो Petroleum Product का खर्च होता था। उसमें बहुत बड़ी भारी मात्रा में बचत होगी। Environment को फायदा होता है। और मैं चाहता हूं कि Metro Travelling ये हमारे देश में एक प्रतिष्ठा का विषय बनना चाहिए। Prestige का विषय बनना चाहिए। हर व्यक्ति गर्व से कहे नहीं नहीं मैं गाड़ी नहीं ले जाऊंगा भई मैं तो Metro से जाना पसंद करूंगा। ये हमारी मानसिकता में बदलाव हमें लाना होगा। और तब जाकर के हम देश को कई समस्याओं से बचा सकते हैं और हमारे लिए गर्व की बात है कि 24 दिसंबर 2002 अटल बिहारी वाजपेयी इस देश के सबसे पहले Metro के Passenger बने थे। आज उस घटना को 15 साल हो गए हैं। उस समय आरंभ हुआ था। आज सौ किलामीटर से भी ज्यादा ये Network फैल चुका है और आने वाले कुछ और समय में ये और बढ़ी मात्रा में जुड़ने वाला है। वो दिन दूर नहीं होगा। जब दुनिया के पहले पांच Metro Network में हमारे इस Network का भी नाम दर्ज हो जाएगा। और ये चीजे देशवासी के लिए एक गौरव का विषय होगा।

आज अटल बिहारी वाजपेयी जी के जन्मदिन को हम एक Good Governance Day के रूप में भी मनाते हैं। कभी-कभी हमारे देश में ये मानकर के चला जाता है सब ऐसा ही चलेगा, ऐसा ही रहेगा छोड़ो यार कौन करेगा। और कभी हम कहते हैं हम तो बहुत गरीब देश हैं क्या करें कुछ है ही नहीं हमारे पास, सच्चाई ये नहीं है दोस्तों, ये देश संपन्न है समृद्ध है लेकिन देश की जनता को उस संपन्नता और समृद्धि से अलग रखा गया है। और इसलिए अगर बारिकियों में देखा जाए तो ध्यान में यही आता है कि समस्याओं की जड़ में एक महत्वपूर्ण कारण है Governance का अभाव, सुशासन का अभाव, होती है, चलती है, मेरे, पराए, तेरे, अपने चीजे उसी में उलझ जाती हैं और एक स्भाव बन गया है। कोई भी काम लेके जाओ हर कोई सामने देखता है फिर धीरे से पूछता है मेरा क्या? पूछता है कि नहीं पूछता है? यही आदत है न और अगर सामने से जवाब अगर फीका आया तेरा कुछ नहीं अगर ये हुआ तो फिर वो हाथ ऊपर करके बोल देता है तो फिर मुझे क्या। शासन व्यवस्था मेरा क्या, वही से शुरू हो और अगर मेरा स्वार्थ सिद्ध न हो तो मुझे क्या, तुम जानो तुम्हारा काम जानें। ये स्थिति ने देश को तबाह किया है। और मैंने इसे बदलने का बीड़ा उठाया है।

मैं जानता हूँ ये चीजे करने में कितनी दिक्कत होती है। मैं भली-भांति जानता हूँ। लेकिन आप मुझे बताइए राजनीति लाभ हो तभी निर्णय करना चाहिए और अगर राजनीतिक लाभ न हो तो निर्णय ही नहीं करना चाहिए। क्या देश को ऐसे अधर में लटक देना चाहिए क्या? और इसलिए भाईयो और बहनों देश ने एक ऐसी सरकार चुनी है जो नीति पर चलना चाहती है। साफ नियत के साथ काम करना चाहती है। और सामान्य मानवी की जिंदगी में बदलाव लाने के सपनों को पूरा करने के इरादे से काम करती है। हमारे सारे निर्णय सामान्य मानवी की जिंदगी में बदलाव लाने के लिए हैं।

ये Metro का आज उद्घाटन हो रहा है। करोड़ों रुपये खर्च हुए हैं। मैं नहीं मानता हूँ कि हिन्दुस्तान के जो Top 10 उद्योगपति होंगे उसमें से कोई इसमें सफर करने के लिए आना वाला है। इसमें तो सफर करने वाले आप लोग हैं। बड़े गर्व के साथ यात्रा करने वाले लोग आए हैं और मैं भी यहां आपके लिए आया हूँ।

Good Governance आपने देखा होगा उन राज्यों की प्रगति अच्छी हो रही है जहां पर Governance पर बल है Good Governance का प्रयास है। और जहां-जहां पर Governance पर सुधार शुरू होता है। शासन व्यवस्था में सुधार शुरू होता है। सरकार accountable बनती है। मुलाजिम responsible बनते हैं। पूरी व्यवस्था, प्रशासन responsible होता है तो अपने आप समस्याएं कम होती नजर आती हैं। अटल बिहारी वाजपेयी जी ने अपने शासन काल में Good Governance पर बल दिया, देश को connectivity के लिए बल दिया। आज एक योजना पूरे देश में किसी भी MLA को मिलिए। किसी भी MP को मिलिए, एक चीज को जरूर आग्रह होनी चाहिए और वो है प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना।

इस देश में उन बातों को भूला देने का भरसक प्रयास हुआ है कि आखिरकर गांव-गांव सड़क पहुंचाने का ये सपना किसका था। बहुत कम लोगों को मालूम है ये सपना अटल बिहारी वाजपेयी का था। प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना अगर किसी ने लगाई तो अटल बिहारी वाजपेयी ने लगाई और उसके कारण आज हिन्दुस्तान का हर गांव पक्की सड़क से जुड़ रहा है और जबसे हम आए हैं हमने बीड़ा उठाया है, कि 2019 तक हर गांव को पक्की सड़क से जोड़ करके वाजपेयी जी ने जिस काम को आरंभ किया था उसको पूर्णतः की ओर ले जाना।

स्वर्णिम चुतुष्क पूरे हिन्दुस्तान को जोड़ने का काम किसी समय रास्ते बनाने के लिए इतिहास में हम शेरशाह सूरी का नाम सुनते आए थे। उसके बाद पूरे हिन्दुस्तान को जोड़ने का एक ही कल्पना का एक ही डिजाइन का स्वर्णिम चुतुष्क बनाने का सपना वाजपेयी जी ने देखा। और अपने ही कार्यकाल में बहुत मात्रा में उसको गति भी दे दी। आज पूरा देश ये नई connectivity नई रोड रचना उसे देखकर के उसका लगता है हां ऐसा लग रहा है कि हम अब दुनिया की बराबरी कर रहे हैं। ये Metro का सपना जिसके पहले पेसंजर अटल बिहारी वाजपेयी थे। आज हिन्दुस्तान के अनेक शहरों में मेट्रो का काम चल रहा है। 50 से अधिक शहरों में बहुत ही जल्द मेट्रो का नेटवर्क और दुनिया को भी आश्चर्य हो रहा है, कि एक देश में मेट्रो नेटवर्क के लिए इतनी बड़ी मात्रा में काम चल रहा है। और विश्व में पूजी निवेश करने वाले इसमें रुचि लगा रहे हैं।

1200 कानून जब मैं चुनाव लड़ रहा था। तो मैंने एक जगह में भाषण में कहा था। कि पहले की सरकारें इस बात का गर्व करती हैं कि हमने ये कानून बनाया, वो कानून बनाया, ठिकना बनाया, फलाना बनाया। अच्छी बात है कानून बनाना Parliament की विशेष जिम्मेवारी है। और समय की आवश्यकता के अनुसार बनाने भी चाहिए। लेकिन मैंने चुनाव अभियान में कहा था कि मैं प्रधानमंत्री बनने के बाद हर दिन एक कानून खत्म करना चाहता हूँ। कानूनों को ऐसा जाल ये Good Governance की सबसे बड़ी रूकावट है। एक ही काम के लिए आपको तीन कानून मिल जाएंगे अगर अफसर करना चाहता है तो एक निकालेगा, लटकाना चाहता है तो दूसरा कानून निकालेगा और अगर फटकाना चाहता है तो तीसरा निकालेगा। सामान्य मानवी को इससे समस्याएं होती हैं और इसलिए सरकार ने अब तक करीब-करीब 1,200 कानून खत्म कर दिए हैं।

Good Governance दिशा में मुझे बराबर याद है जब मैं पहली बार नया-नया प्रधानमंत्री बना तो अखबारों में special news छपते थे। box item छपती थी क्या? ये मोदी के प्रधानमंत्री बनने के बाद लोग समय पर दफ्तर आने लगे हैं। अब

मुझे बताइए कि खुशखबरी है कि दुख होने वाली खबर है। बहुत लोगों को खुशी हुई कि चलो मोदी जी आए तो लोग समय पर आने लगे लेकिन मुझे दुख हुआ कि मेरा देश का क्या हाल है कि एक अफसर समय पर दफ्तर पर चला जाए तो भी मेरा देश खुश हो जाता है। उसने कितने दुख देखे होंगे इसका ये जीता-जागता उदाहरण है।

मैं आज हमारे ऊर्जावान मुख्यमंत्री श्रीमान योगी आदित्यनाथ जी का हृदय से अभिनंदन करना चाहता हूँ। बहुत उत्तम तरीके से उत्तर प्रदेश को आगे बढ़ा रहे हैं। सभी दिशाओं में विकास के मार्ग पर आगे बढ़ रहे हैं। Good Governance पर बल दे रहे हैं। लेकिन उनके कपड़े देखकर के ये भ्रम फैलाया जाता है कि वे आधुनिक सोच के हो ही नहीं सकते। ये पुराण-पोथी होंगे, ये मान्यताओं में बंधे हुए होंगे लेकिन आज मुझे खुशी है कि जिस नौएडा के संबंध में एक छवि बन गई थी कि कोई मुख्यमंत्री यहां आ नहीं सकता है। उस मिथक को योगी जी ने बिना बोले अपने आचरण से सिद्ध कर दिया कि ये सब मान्यताएं गलत होती हैं। आधुनिक युग ऐसा हो नहीं सकता और इसलिए मैं योगी जी को हृदय से बधाई देता हूँ।

मुख्यमंत्री कहीं जाने से कुर्सी चली जाएगी, इस डर से अगर जीते हैं तो ऐसे लोगों को मुख्यमंत्री बनने का हक ही नहीं है। मान्यताओं में कैद कोई भी समाज प्रगति नहीं कर सकता है। हम technology के युग में जी रहे हैं, विज्ञान के युग में जी रहे हैं। श्रद्धा का अपना स्थान होता है लेकिन अंध श्रद्धा के लिए कहीं जगह नहीं हो सकती है। मैं जब गुजरात में मुख्यमंत्री बना, अब ये मुसीबत केवल उत्तर प्रदेश में है ऐसा नहीं है। हिन्दुस्तान के कई राज्य ऐसे हैं, कई जगह ऐसी है जहां मान्यताओं में पता नहीं क्या-क्या, आपने देखा होगा एक मुख्यमंत्री ने कार खरीदी। मैं आधुनिक युग की बात कर रहा हूँ। और किसी ने बता दिया कि कार के कलर के संबंध में तो उन्होंने कार के ऊपर पता नहीं नीबू और मिर्ची न जाने क्या-क्या ये, ये लोग देश को क्या प्रेरणा देंगे। ऐसी अंध श्रद्धा में जीने वाले लोग सार्वजनिक जीवन का बहुत अहित करते हैं। सारे हिन्दुस्तान में कहीं न कहीं इस प्रकार की मान्यताओं में कई सरकारें, कई मुख्यमंत्री फसे पड़े हैं।

जब मैं गुजरात में मुख्यमंत्री बना मेरे ध्यान में कोई छः या सात जगह ऐसी लाई गई कि वहां तो जा ही सकते। अगर वहां कोई जाता है बाद में वो मुख्यमंत्री रहता ही नहीं है, उसकी कुर्सी चली जाती है। मैंने बीड़ा उठाया मैंने कहा मेरे दौरे में पहले ही साल में ही ये सारा पूरा कर दो। मैं उन सब जगह से गुजरात में गया, जहां इस प्रकार की मान्यताओं के कारण तीन-तीन, चार-चार दशक से कोई मुख्यमंत्री उस तरफ गया तक नहीं। सारा उन्होंने खत्म कर दिया। सब जगह पर गया, शान से गया। और उसके बाद भी सबसे लंबे कार्य-काल तक सेवा करने का मौका मुख्यमंत्री के नाते मुझे मिला। अब उस गांव का, उस तहसील का, उस नगर का क्या दोष था। लेकिन आज योगी जी ने नौएडा का जो साथ ये जो टीका लगा था, उसको अपने बलबूते से हटा दिया। बहुत-बहुत बधाई के पात्र हैं आप।

भाईयो बहनों Good Governance अटल बिहारी वाजपेयी जी का जन्मदिन, जब मैं Good Governance की बात करता हूँ तो मैं कुछ तथ्य आपके सामने रखना चाहता हूँ। आप देखिए कि यूरिया का कारखाना लगे और यूरिया के उत्पादन में बढ़ोत्तरी हो। ये तो छोटा बच्चा भी जानता है। लेकिन देश में एक भी नया यूरिया का कारखाना लगाए बिना हमारी सरकार बनने के तुरंत बाद Good Governance को बल दिया गया, आवश्यक नीतियों को निर्धारित किया गया, रोडमैप बनाया गया, लागू किया गया। एक भी नया यूरिया का कारखाना न बनाते हुए भी करीब-करीब 20 लाख टन यूरिया अधिक उत्पादन हुआ। वही कारखाने, वही मशीन, वही Raw Material, वही मजदूर सरकार बदलने के बाद Good Governance पर बल दिया। नया कारखाना न लगते हुए भी उसी पुरानी व्यवस्था में 18-20 लाख टन यूरिया बढ़ जाना ये Good Governance के कारण होता है।

भाईयो बहनों रेल की पटरी बिछाने का काम रेल के मुलाजिम उतने ही हैं। Road, रास्ते वही हैं। रेलवे विभाग वही है। निर्णय करने वाले लोग वही हैं। फाइल का आने-जाने का रास्ता भी वही है। उसके बावजूद भी है। क्या कारण है, कि पहले जितनी रेल की पटरी एक दिन में बिछाई जाती थी। आज हमारी सरकार बनने के बाद उससे दो गुणा पटरी बिछाई जाती है कारण नीति स्पष्ट और नीयत साफ, Good Governance पर बल उसी का परिणाम ये होता है। नई रेल लाइन उसी प्रकार से डबल लाइन जहां एक लाइन existing है न दूसरी लाइन, क्या कारण है कि पहले की सरकारों की तुलना में हमारे आने के बाद ये दोहरीकरण, डबल लाइन का काम डबल हो गया है। कारण Good Governance।

भाईयो और बहनों रास्ते, सड़के बनाना, National Highway पहले एक दिन में जितने बनते थे अचानक सरकार के पास पैसे नहीं आ गए हैं। लेकिन एक-एक पाई का सर्वाधिक अच्छा उपयोग हो, हर मशीन का अच्छे से अच्छा उपयोग हो, समय का अच्छे से अच्छा उपयोग हो ये Good Governance के मूलभूत सिद्धांतों का परिणाम है कि हमारे National Highway का निर्माण पहले की सरकार में एक दिन में जितना होता था, इस सरकार में डबल होता है डबल। कारण Good Governance.

भाईयो और बहनों हमारे देश में आज विश्व व्यापार का युग है। समुद्रीतट का, हमारों बंदरों का महत्व है। हमारे यहां Cargo handling Negative था। Growth हो नहीं रहा था जो था उससे भी पीछे जा रहे थे। हमारे आने के बाद दुनिया नहीं बदली है, हम बदले हैं, सरकार बदली है, इरादे बदले हैं Good Governance पर बल दिया है। और आज उसी

Cargo का Handling का Negative Growth था वो आज 11 percent growth हुआ है। क्योंकि हमने Good Governance लाए हैं।

भाइयो और बहनों Renewable Energy, Solar Energy, Wind Energy, Hydro Power Project, Nuclear Power Project इन सारे क्षेत्र में आज हम जिस प्रकार से काम कर रहे हैं। पहले की तुलना में Renewable Energy की क्षमता हमने डबल कर दी है डबल। भाइयो और बहनों ये Good Governance के कारण हुआ है।

पहले जब सरकार थी अगर आप LED का बल्ब लेने जाएं जिससे बिजली के खर्च में बचत होती है। आप जानकर के हैरान होंगे पहले LED का बल्ब साढ़े तीन साल पहले, मेरे आने से पहले साढ़े तीन सौ रुपये में बिकता था। आज 40-50 रुपये में बिकता है। 28 करोड़ LED बल्ब आज इस देश में पहुंचे 14 हजार करोड़ रुपये से ज्यादा, जिसके घर में LED का बल्ब लगा है। उनकी बचत हुई किसी 200 किसी की 500, किसी की 1000, किसी की 2000, इतना ही नहीं करीब छः हजार करोड़ रुपया LED बल्ब की कीमत कम होने से मध्यम वर्ग के परिवार की जेब में बचे हैं। अगर Good Governance होता है तो कैसे बदलाव आता है। इसका एक जीता-जागता उदाहरण है।

भाइयो बहनों Good Governance होता है तो निर्धारित समय सीमा में कार्यक्रम तय होता है। नीति के आधार पर देश चलता है। किसी के Whim पर नहीं चलता है। नीति black & white में होती है और उसके कारण discrimination का कोई अवकाश नहीं रहता है। और जब discrimination के अवकाश नहीं रहता है तो भ्रष्टाचार की संभावनाएं भी बहुत कम हो जाती हैं।

भाइयो बहनों हम देश में सुशासन के माध्यम से Good Governance के माध्यम से अटल बिहारी वाजपेयी के जीवन की तपस्या से प्रेरणा लेते हुए देश को नई ऊंचाइयों पर ले जाने के लिए प्रयास कर रहे हैं। सबका साथ-सबका विकास इसी मंत्र को लेकर के आगे चल रहे हैं। और हम जब विकास की बात करते हैं तो विकास सर्वसमावेशक हो, विकास सर्वस्पर्शी हो, विकास सार्वदेशिक हो, विकास सबका साथ-सबका विकास-सबकी भागीदारी के साथ मंत्र से जुड़ा हुआ हो, विकास आने वाले भविष्य को ध्यान में रखकर के होना चाहिए। और इसलिए हम विकास उन्मुक्त सुशासन development laid good governance उस पर बल देते हुए आगे बढ़ रहे हैं। और अटल बिहारी वाजपेयी जी ने जिस प्रकार से देश के हर कोने को जोड़ने का काम किया, connectivity का काम किया, मार्ग बनाने का काम किया और इसलिए मैं तो यही कहूंगा अगर अटल बिहारी वाजपेयी जी को सुशासन के संदर्भ में अगर एक वाक्य में उनकी पहचान करानी होगी। तो मैं कहूंगा भारत मार्ग विधाता। अटल बिहारी वाजपेयी भारत मार्ग विधाता। रास्तों की दुनिया को नई ऊंचाई पर ले जाना, लोगों को जोड़ने का काम वाजपेयी जी के माध्यम से हुआ था। आज उनके जन्मदिन पर क्रिसमस के पावन पर्व पर महामना जी के जन्म जयंती पर आज देश को उत्तर प्रदेश और दिल्ली को जोड़ने वाली ये Metro को समर्पित करते हुए मैं बहुत ही गर्व अनुभव कर रहा हूं। मैं फिर एक बार उत्तर प्रदेश सरकार का मुझे इस कार्यक्रम में निमंत्रण देने के लिए आभार व्यक्त करता हूं। उत्तर प्रदेश की जनता का आभार व्यक्त करता हूं। नोएडा के लोगों का आभार व्यक्त करता हूं।

बहुत - बहुत धन्यवाद।

अतुल तिवारी/शाहबाज़ हसीबी/बाल्मीकि महतो/ममता